पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या- एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी० /318/2017-19

ओ३म्

कृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२१, अंकः-८, फरवरी, सन्-२०१६, सं०-२०७५ वि०, दयानंदाब्द १६४, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११६; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

शिवरात्रि–बोधपर्व पर विशेष

वैदिक धर्म में राष्ट्र की उपासना भी धर्म का अंग है !

ऋषि दयानन्द ने राष्ट्रचेतना को दिये नये नये आयाम

राष्ट्रचेतना ही विश्वचेतना का माध्यम बनती है

-क्षितीश वेदालंकार-

अब से ५०० वर्ष पहले राष्ट्र के प्रत्येक प्रदेश में जो भक्तिकाल का युग आया और प्रत्येक प्रदेश में उस उस प्रदेश की भाषा में सन्त कवि पैदा हुए, वह देश की अद्भुत सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है। यदि समग्र देश में सांस्कृतिक एकता का यह मणि-सूत्र न होता, तो यह कैसे सम्भव था कि प्रत्येक प्रान्त में लगभग एक साथ भक्त सन्त कवि पैदा होते। यह चमत्कार इतिहासकारों को आश्चर्य में डाल सकता है। दक्षिण भारत में अलवार सन्त, मध्वाचार्य, निम्बर्काचार्य और वल्लभाचार्य आदि आचार्य, महाराष्ट्र में सन्त तुकाराम, ज्ञानेश्वर, नामदेव और समर्थ गुरु रामदास, बंगाल में चैतन्य देव, जयदेव, हरिदास, असम में शंकरदेव, सुदूर केरल में स्वाति तिरुमाल, गुजरात में नरसी मेहता, राजस्थान में मीरा और राजुल, उत्तर भारत में सूर, तुलसी और कबीर तथा पंजाब में गुरु नानक- इन सबका लगभग एक साथ एक ही काल में उदय जिस आन्तरिक अन्तःसलिला के समान उद्गम का परिचायक है, वह अद्भुत है। इस भक्तिकाल में, और तो और ऐसे लगभग ५० मुसलमान सन्त भक्त कवि हुए हैं जिनके विषय में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का कहना था-

इन मुसलमान हरिजनन पै
कोटिक हिन्दू वारिये।

यह भक्तियुग का व्यापक विस्फोट एक तरह से ज्ञान काण्ड के और कर्म काण्ड के युग के प्रति विद्रोह का सूचक है। ज्ञानमार्ग यदि राजतंत्र था, और कर्म मार्ग सामन्ततंत्र, तो भक्ति मार्ग विशुद्ध लोकतंत्र था जिसमें ज्ञान और कर्म दोनों की उपेक्षा करके केवल भक्ति पर बल दिया गया था- ऐसी भक्ति जिसमें सवर्ण अवर्ण, अमीर गरीब, शिक्षित अशिक्षित सभी को समान स्थान था। वहाँ तो 'ढाई अक्षर प्रेम का पढ़े सो पण्डित होय' की पूछ थी, वहाँ ज्ञान और कर्म की पूछ कहाँ। यह मुगलों की गुलामी के दौर में राष्ट्र के लिए एक ऐसा मदिर आसव था जिसमें सारा राष्ट्र आपादमस्तक डूब गया- देश में सैकड़ों-हजारों मन्दिर बन गए और दक्षिण से चली भक्ति की आंधी सारे देश में छा गई। इस भक्तियुग में आत्ममुग्धता और आत्महीनता की भावना थी, रेत में गर्दन छिपाने वाले शुतुमुर्ग की तरह सारे देश ने गुलामी के उस दौर को सहज भाव से स्वीकार कर लिया और उसके प्रतिकार का कोई सामूहिक और राष्ट्रीय कार्यक्रम नहीं अपनाया। इसीलिए जड़पूजा को अपना कर जाति ने येन केन प्रकारेण जीवित रहने का आधार तो तैयार कर लिया, पर उसका तेज नष्ट हो गया।

इस भक्तिकाल के मूल में आत्मचेतना के साथ जो राष्ट्रीय और सामाजिक चेतना का तत्व छिपा था, उसे सर्वथा भुला दिया गया। उसके लिए फिर मैं विष्णु पुराण का श्लोक उद्धृत करूँगा-

गायन्ति देवाः किल गीतकानि
धन्यास्तु ये भारत भूमि भागे।
स्वर्गापवर्गस्य च हेतुभूते
भवन्ति भूयः पुरुषा सुरत्वात्।।

देवता लोग भी उनके गीत गाते हैं जिन्होंने भारतभूति में जन्म लिया है क्योंकि वे धन्य हैं। देवताओं के लिए केवल स्वर्ग निर्धारित है, अपवर्ग नहीं, पर भारतभूमि के निवासी स्वर्ग और अपवर्ग दोनों के अधिकारी हैं। यह स्मरण रखिए कि देवता स्वर्ग से बंधे रहने के लिए अभिशप्त हैं, अपवर्ग उनके लिए नहीं है।

पर मानव के लिए स्वर्ग और अपवर्ग दोनों हैं। यह 'फरिश्ते से बेहतर है इन्सान बनना', नहीं तो और क्या है? ज्ञानकाण्ड और याज्ञिक कर्मकाण्ड ने परलोक पर बल दिया था और भक्ति काण्ड ने इस लोक पर- इस सीमा तक कि स्वयं भगवान् को बैकुण्ठधाम छोड़ कर इस भारतभूमि में अवतार लेना पड़ा। क्या राष्ट्रीय चेतना का इससे अधिक सबल तत्व भी कुछ और हो सकता है? पर उस तत्व की जिस प्रकार उपेक्षा हो गई, उसने ऋषि दयानन्द को विचलित कर दिया। इस भक्तिकाल में जितना शृंगार-प्रधान काव्य रचा गया, वह रीतिकालीन काव्य की एक प्रमुख धारा ही बन गई। इस रीतिकालीन काव्य में नायिका भेद और उनके नख- शिख की चर्चा ही कवियों की उत्कृष्टता की कसौटी बन गई- और उस सबका आधार बनी कृष्ण और राधा के नाम पर जोड़ी गई पौराणिक कथाएं, जिनमें सत्य का कहीं लेश भी नहीं था।

जड़ता की पराकाष्ठा

हमारे ज्ञानमार्गी और भक्तिमार्गी किस प्रकार सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना से हीन हो चुके थे, इसके लिए ऋषि के कलकत्ता-कथ्य के कुछ उद्धरण देना प्रासंगिक होगा। ऋषि सन् १८५५ में पहली बार कुम्भ के मेले पर गए थे और वहाँ उन्होंने साधुओं को सन् १८५७ की राज्यक्रान्ति के लिए संगठित करने का प्रयत्न किया था। इसी प्रसंग में वे कहते हैं-

"शंकराचार्य के चारों मठों से सम्बन्धित हजारों संन्यासी और ब्रह्मचारी कुम्भ मेले में उपस्थित हुए थे। मैंने उनके चारों शंकराचार्यों से और प्रधान प्रधान संन्यासियों से केवल साधु संगठन के लिए उपदेश, परामर्श और सहयोग मांगा था। मेरी प्रार्थना थी- 'आप में से कई एक संन्यासी आ जाइये। हम लोग सारे भारतवर्ष में कम से कम एक हजार संन्यासी संगठित और मिलित हो जायें। हमारे उद्देश्य रहेंगे- (१) वेदप्रतिपादित धर्म का उद्धार करना, (२) सामाजिक आदर्श और मर्यादा को देशवासियों के सम्मुख स्थापित करना, (३) देश को विदेश और विदेशियों के प्रभाव से मुक्त करना, (४) देश के मंगल के लिए मन और जीवन समर्पित कर देना। आप में से कोई न कोई इस कार्य के संचालक, कर्णधार बन जाइए।

हमारी इस प्रार्थना पर चारों मठों के चारों शंकाराचार्य और बड़े-बड़े संन्यासियों ने इस आशय पर अपने मनोभावों को इस प्रकार प्रकट कर दिया-'हम ब्रह्मवादी संन्यासी हैं, अद्वैतवादी हैं। हमारे लिए ब्रह्म ही एकमात्र सत्य है। राष्ट्र, समाज, परिवार, जीवन, जगत् और ये सब स्वतंत्रता-परतंत्रता, वर्ण, आश्रम, हमारा तुम्हारा भाव सब कुछ मिथ्या है। मिथ्या के लिए हम कुछ भी करना व्यर्थ समझते हैं।

हम उन्हें केवल यह कहकर चले आये थे-'दुःख की बात है कि आपके भोजन के लिए अन्न, पीने के लिए पानी, रहने के लिए स्थान, सर्दी के लिए कम्बल, (गर्मी में) हवा के लिए पंखा और सेवा के लिए शिष्य ही एकमात्र सत्य स्पष्ट हो रहे हैं, शेष सभी कुछ मिथ्या मालूम पड़ते हैं।

इसके बाद निराश होकर मैं वैष्णव सम्प्रदाय के प्रधान प्रधान नेताओं के पास गया था। ये लोग भी कुम्भ में हजारों की संख्या में एकत्र हुए थे। ये लोग द्वैतवादी और वैष्णव-भक्त हैं।

वैष्णवों के अन्दर सम्प्रदाय बहुत हैं। इन सम्प्रदायों के बड़े-बड़े गोस्वामी, महन्त, गुरु और साधु-संन्यासी हरिद्वार के कुम्भ के मेले में सम्मिलित हुए थे। मैंने सभी की सेवा में उपस्थित होकर देश, राष्ट्र और समाज की शोचनीय दशा के प्रति दृष्टि आकर्षण करके अपनी दोनों प्रार्थनाओं को पूर्ववत् रखा था। इन्होंने भी दूसरे ढंग की भाषा का प्रयोग करके मुझको निराश कर दिया था।

उन सबके कहने का सारांश यह था- "हमारे ये शरीर श्रीराम या श्रीकृष्ण के भजन के लिए हैं, दूसरे कार्य के लिए नहीं हैं। दूसरे कार्य का करना, भगवान् के स्थान में देश, समाज और राष्ट्र की सेवा करना महापाप है। मानव शरीर व्यर्थ कार्य के लिए नहीं है। महाप्रभु की सेवा और चिन्तन से मुक्ति मिलेगी, देश-समाज-राष्ट्र की वैषयिक चिन्ता से भगवद्भक्ति ढीली हो जाएगी, मुक्तिलाभ या गोलोक वैकुण्ठ जाने के मार्ग में प्रबल बाधायें आ जाएंगी। मानव जीवन इतना सस्ता नहीं है। चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करके तब भक्ति-साधना के एक मात्र अवलम्बन भजन के लिए शरीर मिला है। इन शरीरों को देश-समाज-राष्ट्र की भजन-विरोधी सेवा के लिए समर्पण करना बुद्धिमानों का कार्य नहीं है।

वैष्णव गुरुओं से निराश होकर लौटते समय मैंने केवल यह वाक्य कहा था-'जिस देश में ऐसे भक्तों की संख्या अधिक है, उस देश का सर्वनाश निश्चित है।"

(ऋषि दयानन्द सरस्वती का अपना जन्म चरित्र, सम्पादक-आदित्यपाल सिंह और डॉ. वेदव्रत आलोक) *(शेष पृष्ठ 3 पर)*

विनय पीयूष

तमसावृत जीवन

असुर्या नाम ते लोकाऽअन्धेन तमसावृताः।
ताँस्ते प्रेत्यापिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः।

(यजुर्वेद : 40/3)

असुर सदृश ही उनकी गति है!

जो आत्मा का
हनन कर रहे,
मनमाना
आचरण कर रहे,

तमसावृत है उनका जीवन,
बाद मरण भी यही नियति है!

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

'भारत रत्न' की फीकी चमक

राष्ट्र कैं सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' की फीकी पड़ती आभा को लक्ष्य करके योगऋषि बाबा रामदेव जी महाराज की इस टिप्पणी ने सभी को चौंका दिया है कि आज तक 'भारत रत्न' सम्मान किसी संन्यासी को क्यों नहीं दिया गया? स्वामी रामदेव जी कहते हैं यह देश का दुर्भाग्य ही है कि 'भारत रत्न' सम्मान के जो सर्वप्रथम हकदार हैं, उन्हें इससे पृथक् रखा गया है। स्वामी रामदेव जी के इस कथन का यह अभिप्राय निकालना बेमानी है कि स्वामी जी स्वयं इस सम्मान की प्राप्ति के आकांक्षी हैं। स्वामी जी वर्षों पूर्व घोषणा कर चुके हैं कि उन्हें पद्म सम्मान या रत्न सम्मान पाने की लेशमात्र भी कामना नहीं है, वे तो भारत को सर्वशक्ति सम्पन्न राष्ट्र के रूप में देखना चाहते हैं।

यहाँ मैं भारतीय राष्ट्रनायकों के दिन ब दिन ह्रासोन्मुख चिन्तन क्षमता के स्तर की ओर इंगित करना चाहता हूँ क्योंकि 'भारत रत्न' सम्मान प्रदान करने के संबन्ध में दो मौलिक भूलें हो चुकी हैं। पहली भूल तो उस दिन हुई कि जब एक क्षेत्र विशेष/वर्ग विशेष में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्ति को यह सम्मान दे दिया गया। वस्तुतः 'भारत रत्न' उसी महापुरुष को मिलना चाहिए जिसके कार्य और प्रभाव के दायरे में कश्मीर से कन्याकुमारी तक सम्पूर्ण राष्ट्र समाहित हो। किसी एक क्षेत्र या वर्ग तक जिसका कार्य सीमित हो, उसे यह सम्मान दे देना कदापि न्यायोचित नहीं हो सकता है। सीमित संकीर्ण दृष्टि के कारण एक क्षेत्र विशेष तक सीमित व्यक्ति को जब यह सम्मान दे दिया गया तो उसकी तीखी आलोचना हुई जो इस सम्मान को लेकर नहीं होना चाहिए थी। 'यदि क्रीड़ा क्षेत्र के प्रदर्शन के आधार पर भारत रत्न देना था तो हाकी के जादूगर ध्यानचंद की उपेक्षा करके किसी अन्य को यह सम्मान कैसे दिया जा सकता है?

दूसरी भूल उस दिन हुई जब दिवंगत व्यक्तियों को यह सम्मान देना शुरू किया गया। इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखने वालों की संख्या अत्यधिक है। अतः उचित निर्णय किसी दल या विचारधारा से सम्बद्ध व्यक्ति नहीं कर सकते। अतीत में जाने पर अपात्र भी यह सम्मान प्राप्त कर सकते हैं। अतीत से सम्बंधित किसी अपात्र व्यक्ति को यह सम्मान दिया जा चुका है या नहीं इस ऊहापोह में न पड़कर स्वामी रामदेव जी की टिप्पणी पर विचार करना जरूरी है।

संन्यासी समग्र मानवता की सम्पत्ति या विभूति होता है। आधुनिक भारत के निर्माण, जन जागरण, विश्व मानव प्रेम की दृष्टि से दो संन्यासी ऐसे हैं, जिन्होंने भारतोत्थान में अतुलनीय योगदान किया। प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' की समाप्ति पर श्री वृन्दावनलाल वर्मा ने १८५७ की क्रान्ति और महारानी लक्ष्मीबाई के बलिदान के बाद स्वराज्य की ज्योति जगाने वाल जिन दो तीन नामों का उल्लेख किया है उनमें महत्वपूर्ण नाम है-स्वामी दयानन्द। १८५७ की क्रान्ति के दमन के बाद महारानी विक्टोरिया की इस घोषणा का कि 'मैं भारत की जनता का पुत्रवत् ध्यान रखूँगी'- का उत्तर देने वाला संन्यासी दयानन्द ही था; जिसने अमर ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में लिखा- ''पुत्रवत् पालन करने वाले विदेशी राज्य से स्वदेशी राज्य हजार गुना बेहतर है। कोई कितना भी करे स्वदेशी राज्य सर्वोपरि है।'' ऋषिवर के इन उद्गारों के फलस्वरूप आगे चलकर लोकमान्य तिलक को यह कहने का अवसर प्राप्त हुआ-'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।' इतना ही नहीं, इसी संन्यासी ने सर्वप्रथम उत्तम शिक्षा, उत्तम संस्कार, स्वदेश प्रेम, सामाजिक कुरीतियों के निराकरण, दलितोद्धार, शुद्धि आन्दोलन- सभी क्षेत्रों में क्रान्ति का शंखनाद किया- जैसा कि अभी अभी सम्पन्न अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के मंच से योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री उ.प्र. ने कहा था-'महर्षि दयानन्द ने देश में क्रान्तिकारियों की फौज खड़ी कर दी थी' (आर्य लोक वार्ता, वर्ष २१, अंक-५) स्वामी जी ने जिस गुजरात की पवित्र धरती पर जन्म लिया था, उसी धरती ने मोहनदास कर्मचंद गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल और नरेन्द्र दामोदर मोदी को उपजाया। यदि दयानन्द न होते तो कर्मचंद गांधी, वल्लभभाई पटेल और नरेन्द्र दामोदर भी न होते। प्रणम्य है गुजरात की उर्वर धरा और प्रणम्य है, *नवजागरण का पुरोधा दयानन्द।*

दयानन्द के साथ ही जिस अन्य संन्यासी का नाम जुड़ा हुआ है, जिसने शिकागो की धर्मसभा में अपनी चमत्कारिणी प्रतिभा और मनोहारिणी वक्तृता से विश्व में एक युगान्तर उपस्थित करते हुए भारत को विश्वगुरु पद का अधिकारी सिद्ध किया था, उस युवा संन्यासी का नाम है-स्वामी विवेकानन्द। जिसने १८९७ में अपने एक भाषण में कहा था-'भारतवासियों! अगले ५०वर्षों तक तुम्हें एक ही देवता की उपासना करनी है, एक ही आराध्य की अर्चना करनी है, वह है भारतमाता। तुम देखोगे कि देवी स्वतंत्रता तुम्हारी आरती उतारेगी।' ठीक ५० वर्ष बाद १९४७ में भारत बंधनों की शृंखलाओं से मुक्त हो गया। आज भी यदि आप हरिद्वार के विश्व विख्यात भारतमाता मंदिर के दर्शनार्थ जायें तो उसके ऊपरी कक्ष में जहाँ आधुनिक महापुरुषों की प्रतिकृतियाँ सजी हैं। एक ही प्रकोष्ठ में दो प्रतिकृतियाँ एक साथ सुसज्जित हैं- एक है दयानन्द और दूसरी विवेकानन्द। इन दोनों संन्यासियों को 'भारत रत्न' सम्मान देने से इनके गौरव और महत्ता में कोई अभिवृद्धि नहीं होगी किन्तु यह भारत राष्ट्र अवश्य ही गौरवान्वित होगा और 'भारत रत्न' की फीकी पड़ती चमक निखर उठेगी।

१८५७ की क्रान्ति के बाद उठे हुए जिस स्वराज्य आन्दोलन के कारण १९४७ को भारत में आजादी के पुण्य प्रभात का आगमन हुआ, उसके सूत्रधार स्वामी दयानन्द और विवेकानन्द- इन दो संन्यासियों को छोड़कर अन्य किसी को 'भारत रत्न' अलंकरण दिये जाने का न कोई अर्थ है और न कोई औचित्य।

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१९२

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में नवम समुल्लास का अंश

मुक्ति के साधन

जो कोई दुःख को छुड़ाना और सुख को प्राप्त होना चाहै वह अधर्म को छोड़ धर्म अवश्य करे। क्योंकि दुःख का पापाचरण और सुख का धर्माचरण मूल कारण है।

सत्पुरुषों के संग से विवेक अर्थात् सत्यासत्य, धर्माधर्म, कर्त्तव्याकर्त्तव्य का निश्चय अवश्य करे। पृथक्-पृथक् जानें और शरीर अर्थात् जीव पंचकोशों का विवेचन करें। एक 'अन्नमय' जो त्वचा से लेकर अस्थिपर्यन्त का समुदाय पृथिवीमय है। दूसरा 'प्राणमय' जिसमें 'प्राण' अर्थात् जो भीतर से बाहर जाता, 'अपान' जो बाहर से भीतर आता, 'समान' जो नाभिस्थ होकर सर्वत्र शरीर में रस पहुँचाता, 'उदान' जिससे कंठस्थ अन्न पान खैंचा जाता और बल पराक्रम होता है, 'व्यान' जिससे सब शरीर में चेष्टा आदि कर्म जीव करता है। तीसरा 'मनोमय' जिस में मन के साथ अहंकार, वाक्, पाद, पाणि, पायु और उपस्थ पांच कर्म इन्द्रियां हैं। चौथा 'विज्ञानमय' जिसमें बुद्धि, चित्त, श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिह्वा और नासिका ये पांच ज्ञान इन्द्रियां जिनसे जीव ज्ञानादि व्यवहार करता है। पांचवां 'आनन्दमयकोश' जिसमें प्रीति प्रसन्नता, न्यून आनन्द, अधिकानन्द, आनन्द और आधार कारण रूप प्रकृति है। ये पांच कोष कहाते है। इन्हीं से जीव सब प्रकार के कर्म, उपासना और

ज्ञानादि व्यवहारों को करता है।

तीन अवस्था-एक 'जागृत' दूसरी 'स्वप्न' और तीसरी 'सुषुप्ति' अवस्था कहाती है।

तीन शरीर हैं-एक 'स्थूल' जो यह दीखता है। दूसरा पांच प्राण, पांच ज्ञानेन्द्रिय, पांच सूक्ष्म भूत और मन तथा बुद्धि इन सत्तरह तत्त्वों की समुदाय 'सूक्ष्मशरीर' कहाता है। यह सूक्ष्म शरीर जन्ममरणादि में भी जीव के साथ रहता है। है। इसके दो भेद हैं-एक भौतिक अर्थात् जो सूक्ष्म भूतों के अंश से बना है। दूसरा स्वाभाविक जो जीव के स्वाभाविक गुण रूप हैं। यह दूसरा अभौतिक शरीर मुक्ति में भी रहता है। इसी से जीव मुक्ति में सुख को भोगता है। तीसरा कारण जिसमें सुषुप्ति अर्थात् गाढ़ निद्रा होती है वह प्रकृति रूप होने से सर्वत्र विभु और सब जीवों के लिए एक है। चौथा तुरीय शरीर वह कहाता है जिसमें समाधि से परमात्मा के आनन्दस्वरूप में मग्न जीव होते हैं। इसी समाधि संस्कार जन्य शुद्ध शरीर का पराक्रम मुक्ति में भी यथावत् सहायक रहता है।

इन सब कोष, अवस्थाओं से जीव पृथक् है, क्योंकि यह सबको विदित है कि अवस्थाओं से जीव पृथक् है। क्योंकि जब मृत्यु होता है तब सब कोई कहते हैं कि जीव निकल गया। यही जीव सब का प्रेरक, सब का धर्त्ता, साक्षी, कर्त्ता, भोक्ता कहाता है। जो कोई ऐसा कहे कि जीव कर्त्ता भोक्ता नहीं तो उसको जानो कि वह अज्ञानी, अविवेकी है। क्योंकि बिना जीव के जो ये सब जड़ पदार्थ हैं इनको सुख दुःख का भोग वा पाप पुण्य कर्तृत्व कभी नहीं हो सकता। *(क्रमशः)*

वेद प्रवचन

वरुण के तीन पाश

पं.शिव कुमार शास्त्री, भू.पू.संसद सदस्य

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम।।
(ऋ. : 1/24/15)

शब्दार्थ-

(**वरुण**) स्वीकार करने योग्य प्रभो! आप (**अस्मत्**) हमलोगों से (**अधमम्**) निकृष्ट (**मध्यमम्**) बीच के (**उत्**) और (**उत्तमम्**) सबसे ऊपर के दृढ़ तथा दुःखदायी (**पाशम्**) बन्धन को (**विश्रथाय**) विशेष रूप से ढीला, अर्थात् विनष्ट कीजिए। (**अथ**) इसके पश्चात् (**आदित्य**) विनाशरहित प्रकाशस्वरूप जगदीश्वर! (**तव**) सबके गुरु आपके (**व्रते**) सत्याचरण व्रत को धारण करके (**अनागसः वयम्**) हम सब निष्पाप होकर (**अदितये**) विनाशरहित सुख को (**स्याम**) प्राप्त करें।

व्याख्या-

मंत्र में तीन बातें मुख्य रूप से कही गई हैं- पहली यह है कि प्रत्येक मनुष्य तीन बन्धनों से बँधा हुआ है। दूसरी यह कि उन बन्धनों से मुक्त होने के लिए बुद्धिपूर्वक प्रयत्न करना चाहिए। तीसरी यह कि उन बन्धनों से छूटकर दिव्यव्रतों के बन्धनों में स्वयं आपने आपको बांधकर अपने एक-एक पाप को समाप्त कर, सर्वथा निष्पाप और पवित्र होने पर जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करना चाहिए। अब प्रत्येक बात पर क्रमशः विचार कीजिये।

भक्त भगवान् से प्रार्थना करता है-हे आदित्य! मर्यादापालक, अखण्ड, एकरस प्रकाशस्वरूप प्रभो! हे वरुण! भक्तों के द्वारा वरणीय तथा भक्तों के सत्कर्म देखकर उनको शरण देनेवाले! (महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में वरुण शब्द का धातु के आधार पर **'वृणोति भक्तान् व्रियते वा भक्तैः'** जिसे भक्त संसार के असंख्य आकर्षणों को छोड़कर चुनते हैं, अर्थ किया है।) अतः वरण करने योग्य प्रभो! मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मैं तीनों स्थानों पर, तीन पाशों से जकड़ा हुआ हूँ, आप कृपा करके **'उत्तमं पाशमुत् श्रथाय'**-'ऊपर के अर्थात् शिरोभाग में पड़े हुए पाश को **'उत् श्रथाय'** ऊपर से ढीला कर दीजिये-खोल दीजिये।' ऊपर के पाश को खोलने के लिए **'श्रथाय'** क्रिया के साथ **'उत्'** उपसर्ग बहुत अर्थपूर्ण है। ऊपर का बन्धन यदि ऊपर से ढीला हो जाय तो फिर शिर के ऊपर खिसकाकर छूटने है गर्दन से ऊपर का शिरोभाग। इसे में क्या कठिनाई है?

आगे फिर प्रार्थना में कहा- **'अधमं पाशमवश्रथाय'**-जो मेरे नीचे मार्ग, अर्थात् पैरों का बन्धन है उसे **'अवश्रथाय'** नीचे से ढीला कर दीजिये। यहाँ क्रिया के साथ **'अव'** उपसर्ग भी उसी वजन का है। नीचे का बन्धन यदि ढीला हो जाय तो फिर एड़ियों के नीचे खिसकाने मात्र से छुटटी हो गई। इससे आगे विनय की **'मध्यमं पाशं विश्रथाय'**- मेरे मध्य भाग अर्थात् कमर के बँधे फंदे को **'विश्रथाय'** विशेषरूप से ढीला कर दीजिये। यहाँ भी क्रिया के साथ **'वि'** उपसर्ग बहुत ही भावपूर्ण है। कमर में पड़ा हुआ बन्धन जबतक विशेष ढीला नहीं होगा- नहीं खुलेगा, तबतक उससे छूटना भी सम्भव नहीं। बिना विशेष ढीला हुए न वह ऊपर से उतरेगा और न नीचे खिसकेगा। इस प्रकार आपकी कृपा से इन तीनों पाशों से छूटकर मैं आपके 'व्रत' के बन्धन में बँधूँ। इस व्रत-बन्धन के परिणामस्वरूप मैं **'अनागसः'**-'निष्पाप हो जाऊँगा, शुद्ध-पवित्र हो जाऊँगा।' इस शुद्धि के कारण मैं उसके अबाध आनन्द का भागी बन जाऊँगा। यह हुआ मंत्र का आशय।

अधमाचरण करने से दुःखदायक बन्धन 'पाश' कहलाते हैं। मानवाचरण सम्बन्धी त्रुटियों को मनुष्य की इन्द्रिय और शरीर को ध्यान में रखकर तीन भागों में बांटा गया है। मानव देह मोटे रूप से तीन भागों में विभक्त है। इसका पहला भाग संस्कृत. में उत्तमांग कहते हैं। यह उत्तमांग इसलिए है कि पांच ज्ञानेन्द्रियों में से चार यहां अपना मुख्यालय बनाकर रहती हैं-आंख, कान, नाक और रसना। पांचवीं ज्ञानेन्द्रिय त्वचा, जो समस्त शरीर पर है, वह भी अंशतः यहां विद्यमान है, अतः ज्ञानेन्द्रियों का पड़ाव होने के कारण इसे उत्तमांग कहते हैं।

शरीर के मध्यभाग में पेट और उपस्थ है। पेट 'अर्थ' का प्रतिनिधित्व करता है और उपस्थ 'काम' का। ये दोनों बड़े दृढ़ बन्धन हैं। पेट की लपेट का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। पायः पाप की दुनिया में सर्वाधिक बदनाम पेट ही है। काम का बन्धन भी कम उलझन भरा नहीं है। ये दोनों महान् बन्धन हैं। इनके फंदे में फंसे व्यक्ति का धर्म-कर्म की बातें नहीं सुहातीं। अतः शरीर के मध्य में होने से ये अर्थ और काम के बन्धन हुए मध्य पाश। शरीर के नीचे के भाग में पैर हैं। इस भाग में जितना चर्म लिपटा हुआ है, उसके आधार पर स्पर्श के द्वारा सर्दी गर्मी का बोध होता है, अर्थात् ज्ञान की मात्रा बहुत न्यून है। इसी प्रकार अज्ञानता के कारण जो भूलें होती रहती हैं, वे अधम पाश कहलाती हैं। अधम इसलिए कि इनसे छूटना सरल है। शरीर को दृष्टि में रखकर ही उत्तम, मध्यम और अधम नाम से पुकारा गया। इसका यह अभिप्राय नहीं है कि कुछ पाप उत्तम कोटि के, अर्थात् अच्छे होते हैं और कुछ बीच के तथा उनसे हीन प्रकार के होते हैं।

अब आया मध्यम पाश। इसका क्षेत्र भी बहुत विस्तीर्ण है। अर्थ-उपार्जन में हेराफेरी तथा जननेन्द्रिय का असंयम उसके पाशों का स्वरूप है। आय के स्रोतों का मर्यादित और पवित्र होना तथा जननेन्द्रिय का संयम इसके व्रत हैं।

इसके आगे तीसरा अधम पाश है। इसका क्षेत्र अबोध और अज्ञान है। मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अधिकाधिक ज्ञानार्जन करके सत्य को जाने। सत्य का प्रकाश होने पर अज्ञानजन्य त्रुटियों के फलस्वरूप दुःखों के भोगने का प्रश्न ही नहीं उठता। इस प्रकार पाशमुक्त होकर और व्रताचरण से शुद्ध और पवित्र बनकर मोक्ष के अधिकारी बनें।

(अति सौरभ से साभार)

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-११६

तवोद्बोधे बुद्धाः सततगतिमन्तस्तव गतौ
मुहुस्ते हुंकारैर्वययमपि रता हुंकृतिरवे।
त्वदीयैः ससंघषैर्वेयमपि च संघर्षनिपुणाः
कथं निर्जीवेषु क्षरसि सततं जीवनमिदम्।।

तुम्हारे जगाने से हम जगे !
तुम चले तो हम भी अनवरत
चलते रहे !!
तुमने शत्रुओं को ललकारा तो
हम भी ललकारने लगे !!!
तुम्हारे संघर्षों में भाग लेकर
हम भी संघर्षों में निपुण
होते गये !
तुम निर्जीव शरीरों में
यह जीवन अनवरत कैसे
फूंक देते हो?

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

(पृष्ठ 1 का शेष....)

वैदिक धर्म में.....

मूर्तिपूजा का अभिशाप

जड़ मूर्ति की पूजा ने भक्तों को इस सीमा तक आलसी, निष्क्रिय और कायर बना दिया कि वे देश-समाज-राष्ट्र की सेवा को महापाप तक कहने लगे। इससे बढ़कर देश का दुर्भाग्य और क्या होगा? इस मूर्तिपूजा ने जहाँ लोगों को भाग्यवादी और कर्म-विमुख बनाया, वहाँ नाना सम्प्रदायों ने परस्पर वैद-विरोध-विद्वेष की लहर भी चलाई। सभी पौराणिक मूर्ति पूजक सम्प्रदाय अपने अपने इष्टदेव को सबसे बड़ा देवता और अन्यों के इष्टदेव को उनका अनुचर और कृपाकांक्षी सेवक बताने लगे। शैव, वैष्णव, शाक्त आदि सम्प्रदाय परस्पर विद्वेष की आग में इस प्रकार जलने लगे कि दूसरे सम्प्रदाय वाले को देखते ही मुँह फेर लेते। माथे पर कितनी खड़ी या पड़ी रेखाएं लगती हैं, यही सबसे बड़ा कर्म काण्ड बन गया। इकबाल ने ठीक ही लिखा था-

सच कह दूँ ऐ बिरहमन! गर तू बुरा न माने,
तेरे सनमकदों के बुत हो गये पुराने।
अपनों से बैर रखना तूने बुतों से सीखा-
जंगो जदल सिखाया वाइज को भी खुदा ने।

अपनों से वैर और गैरों से मुकाबले के समय मूर्ति की सर्वशक्तिमत्ता पर भरोसा- यही तो देश की पराधीनता का मुख्य कारण था। प्रश्न वही है न- 'क्या यही सच्चा शिव है जो अपने सिर पर से चूहों को भी नहीं हटा सकता?' सिन्ध में जिस तरह राजा दाहर की पराजय हुई, सोमनाथ मंदिर को जिस तरह निर्ममता पूर्वक लूटा गया, बख्तियार खिलजी ने जिस प्रकार बौद्ध मठों को और नालन्दा को भूमिसात् किया, थोड़ी सी घुड़सवार सेना के बल पर बिहार और बंगाल को पामाल किया और उसके विरोध में कोई संगठित प्रयास नहीं किया गया- इस राष्ट्रीय कलंक के मूल में मूर्तिपूजा के द्वारा उत्पन्न सामाजिक नपुंसकता ही सबसे बड़ा कारण है। इसलिए ऋषि दयानन्द जैसा राष्ट्रचेता मूर्तिपूजा के विरुद्ध खड्गहस्त न होता, तो क्या करता। मूर्तिपूजा के इस प्रबल खण्डन में राष्ट्र-चेतना ही प्रमुख कारण है।

केवल वेद नहीं

मैं भी मानता हूँ कि ऋषि दयानन्द यदि शरीर है तो वेद उसकी आत्मा है। महर्षि जैमिनि के पश्चात् ऋषि दयानन्द जैसा वेदोद्धारक पैदा नहीं हुआ। इसलिए जिस तरह मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम 'धनुर्धारी' के नाम से विख्यात हैं, और श्रीकृष्ण 'बंसीवाले' या 'मुरलीधर' के नाम से, एवं गुरु गोविन्दसिंह 'कगली वाले' के नाम से, इसी तरह से कुछ लोग ऋषि दयानन्द को भी 'वेदांवाले संत, स्वामी दिगन्त, जग को जगा दिया तूने'-कहते हुए मस्त होकर गाते हैं। 'वेदां वाले संत' कहने में वही एकांगिता है जो श्रीकृष्ण को केवल 'बंसीवाला' कहने में। क्या श्रीकृष्ण के सुदर्शन चक्रधारी रूप की किस भी रूप में अवहेलना की जा सकती है? पर भक्त सम्प्रदाय ने कुरुक्षेत्र के रणक्षेत्र को भुला कर वृन्दावन को रस और रास की लीलास्थली बना दिया और श्रीकृष्ण को वहीं तक सीमित कर दिया। इसी तरह केवल वेद वेद का नारा लगाने वालों ने भी ऋषि दयानन्द के राष्ट्रीय चेतना वाले स्वरूप को ओझल कर दिया। तभी मुझे यह नारा लगाना पड़ा कि आर्य समाज की दो भुजाएं हैं- एक वेद और दूसरी राष्ट्र। जो केवल एक भुजा की बात करता है वह आर्य समाज को विकलांग बना देना चाहता है। अंग्रेजों के पिट्ठुओं ने और ब्रिटिश सेवा से ऐश्वर्य-सम्पन्न बने लोगों ने ही इस बात पर सबसे अधिक जोर दिया कि आर्यसमाज केवल वेद को मानने वाली एक धार्मिक संस्था है, उसका राष्ट्र या राजनीति से कोई वास्ता नहीं। जितना जितना उसके धार्मिक स्वरूप पर जोर दिया जाता है, उतना उतना मेरे मन में आक्रोश बढ़ता जाता है, क्योंकि राष्ट्रीयता से विहीन धर्म केवल एक सम्प्रदाय बन कर रह जाता है- जिस तरह ईसाईयत या इस्लाम। इसीलिए ईसाईयत या इस्लाम में राष्ट्रवाद का कोई स्थान नहीं है, जबकि वैदिक धर्म में राष्ट्र की उपासना भी धर्म का अंग है, क्योंकि राष्ट्रचेतना ही अन्त में विश्वचेतना का माध्यम बनती है। जिस तरह मैं आत्मचेतना को राष्ट्रचेतना का मूल मानता हूँ उसी तरह राष्ट्रचेतना को विश्वचेतना का मूल मानता हूँ। इसीलिए मैं 'जयहिन्द' की सीढ़ी के बिना 'जयजगत्' के नारे को हवाई और खोखला मानता हूँ। पर आजकल के भक्तों और धार्मिक लोगों को राष्ट्रीय शान्ति की उतनी चिन्ता नहीं, जितनी विश्व शान्ति की है। इसीलिए जहाँ देखो वहाँ विश्वशान्ति के नाम पर यज्ञों, कीर्तनों और पूजापाठ की भरमार है। जो अपने सिर पर छत का इन्तजाम नहीं कर सकते, वे 'आकाश बांधूँ पाताल बांधूँ' के कुलाबे मिलाते रहे, इसमें पलायनवादी मानसिक विलास और भक्तजनों के आर्थिक शोषण की पौराणिक परम्परा नहीं तो और क्या है? एक खास बात यह भी ध्यान देने की है कि आर्यसमाज के स्वनामधन्य नेताओं ने जितना राष्ट्रीयता विहीन धार्मिक संस्थावाद पर जोर दिया, आर्य जनता ने उतना नहीं। आर्य जनता सदा राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत रही। और तो और, ये आर्यनेता अपने पुत्रों को भी इस राष्ट्रचेतना से नहीं बचा सके। स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, महाशय कृष्ण, महात्मा आनन्द स्वामी- चारों आर्य नेताओं के पुत्र क्रांतिकारी बने।

मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि जिस तरह ऋषि दयानन्द ने वेदमंत्रों के अर्थ किए हैं और सब प्रकार के पाखण्डों, अन्धविश्वासों और सामाजिक कुरीतियों केजनक होने के पौराणिक वेदाभिमानी पण्डितों द्वारा लगाए गए कलंक से मुक्त किया है, उसके पीछे राष्ट्रीय चेतना ही प्रमुख कारण थी। यदि उनके मन में यह राष्ट्रचेतना न होती, तो हो सकता है कि वे वेदों को इस रूप में उपस्थित न करते। क्या ऋषि दयानन्द से पहले किसी भी पूर्ववर्ती भाष्यकार ने वेदमंत्रों के राष्ट्रपरक औरा राजनीति-परक अर्थ करने का साहस किया है? इसका मूल कारण यही है कि पूर्ववर्ती भाष्यकारों में ऋषि जैसी राष्ट्रचेतना का विकास नहीं हुआ था, वे केवल आत्मचेतना के स्तर तक ही रह गए थे।

जब ऋषिवर सन् १८५५ में पहली बार हरिद्वार में कुम्भ के मेले पर गए थे, उससे पहले वे लगभग दस वर्ष तक योगियों, साधुओं, तांत्रिकों और नाना मत मतान्तरों में फँसे सामान्य नागरिकों के सम्पर्क में आए थे और उन्होंने देश की दुर्दशा का निकट से अवलोकन किया था। इसी कारण उनकी आत्मचेतना राष्ट्र चेतना में विकसित होती जा रही थी। मेरे लिए यह प्रश्न गौण है कि सन् १८५७ की प्रथम राज्यक्रान्ति में ऋषि ने कोई सक्रिय भाग लिया या नहीं। मेरे लिए मुख्य यह है कि उनमें जिस सीमा तक राष्ट्रचेतना का परिपाक हुआ था, वह उनको शान्त नहीं बैठने दे सकती थी। उन्होंने १८५७ के स्वातंत्र्य समर में सक्रिय भाग लिया हो या न लिया हो, पर इस पर तो किसी को विवाद नहीं है कि उन्होंने उस राज्यक्रान्ति को अपनी आँखों से विफल होते देखा था और उनकी राष्ट्रचेतना भविष्य में वैसी पराजय के प्रतिकार के लिए उन्हें किसी रचनात्मक दिशा को सोचने के लिए विवश कर रही थी। उसी मानसिक उथल-पुथल के बीच वे सन् १८६० में गुरु विरजानन्द की शरण में मथुरा पहुँचे थे।

('आप्त राष्ट्रपुरुष-ऋषि दयानन्द- मेरी दृष्टि में' से सम्पादित अंश, साभार)

व्यक्ति-विशेष

मानवीय संवेदनाओं की पुंजीभूत अग्निदीप

श्रीमती कुमुद गुप्त

(बी-1/114, सेक्टर-जी, अलीगंज, लखनऊ-226024)

सरल तम निर्भ्रान्त जीवन,
मंदमारुत मधुर मधुवन।
इड़ा-श्रद्धा समन्वित मन;
कुमुद गुप्ता चन्द्रमोहन।।

साहस और शौर्य से भरे हुए कर्नल चन्द्रमोहन गुप्त की जीवन संगिनी कुमुद जी- जिन्दगी के अष्टम दशक के दौर से गुजर रही हैं। कुमुद जी की मैं मानवीय संवेदनाओं, स्नेह, करुणा और प्रेम की दीपशिखा के रूप में मैं देखता हूँ। अस्वस्थ होते हुए भी उनमें भावनाओं-अनुभूतियों का पारावार लहराता रहता है।

कुमुद जी अक्सर अपने स्नेहोदधि भ्राताश्री पाल प्रवीण द्वारा संचालित 'वैदिक सत्संग' में दिखा करती थीं। आध्यात्म और साहित्य की समझ और जिज्ञासु-वृत्ति से उन्होंने मेरा ध्यान आकर्षित किया था। कई बार उन्होंने सुन्दर हस्तलिपि में अपनी अनुभूतियों को उकेरते हुए आशीर्वाद के दो शब्द सहित ऋत्विक् सहयोग की राशि स्वयं प्रादुर्भूत प्रेरणा से प्रेषित करती रही हैं, जिससे मेरी आन्तरिक शक्ति में वृद्धि हो रही है।

श्री पाल प्रवीण का 'योगाश्रम' एक ऐसा तीर्थ स्थान है, जहाँ पूज्य आचार्य प्रवर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा रचित 'संस्कार विधि' एवं ऋषि के मन्तव्यों के अनुरूप यज्ञ करने-कराने का सुअवसर प्राप्त होता है। अन्यथा प्रक्षेप से मुक्त यज्ञ की प्रणाली का पूर्णतया परित्याग किया जा चुका है। यज्ञोपरान्त वहीं पर एक दिन कुमुद जी ने मशहूर विश्वविख्यात लेखक सम्पादक विचारक- स्व.खुशवन्त सिंह जी से प्राप्त प्रशस्ति पत्र की प्रतिलिपि मुझे एक सुन्दर बैग में रखकर भेंट की; जिसमें जीवन की संध्यावेला में खुशवन्त सिंह के मन में उत्पन्न हुई जिज्ञासाओं का समाधान अंकित था। खुशवन्त सिंह की यह जिज्ञासा थी कि 'ओम्' और 'स्वाहा' शब्द का अर्थ और प्रलोभन क्या है? इसका उचित ग्राह्य समाधान वे जानना चाहते थे। खुशवन्त सिंह की यह जिज्ञासा तत्कालीन अनेक अंग्रेजी-हिन्दी के समाचार पत्रों में छपी थी ओर बहुतों ने इसका समाधान लिखकर उनके पास भेजा भी था। किन्तु इन शब्दों का ग्राह्य अर्थ वैदिक शास्त्रों का ज्ञाता ही दे सकता था। यह समाधान श्रीमती कुमुद जी ने खुशवन्त सिंह के पास लिखकर भेजा था। कुमुद जी के समाधान से सन्तुष्ट होकर श्री खुशवन्त सिंह ने एक पत्र श्रीमती कुमुद जी को लिखकर भेजा था जिसमें उनके द्वारा प्रस्तुत समाधान की भूरि-भूरि सराहना की गई थी और सन्तोष व्यक्त किया गया था। इससे मुझे ज्ञात हुआ कि कुमुद जी कोई सामान्य नहीं वरन् ज्ञानराशि से समृद्ध असाधारण महिला हैं। क्योंकि खुशवन्त सिंह सरीखे बौद्धिक व्यक्ति की जिज्ञासा का शमन करना कोई मामूली बात नहीं थी। (कुमुद जी के द्वारा 'ओम्' और 'स्वाहा' की व्याख्या तथा श्री खुशवन्त सिंह का अंग्रेजी में लिखित धन्यवाद पत्र विस्तारभय से यहाँ हम नहीं दे रहे हैं।)

जिज्ञासा का समाधान तो वही कर सकता है, जो स्वयं भी उच्चकोटि का जिज्ञासु हो। कुमुद जी ने यह साबित कर दिया है कि वे जिज्ञासा का समाधान ही करना नहीं जानती हैं, वरन् स्वतः श्रेष्ठ जिज्ञासु भी हैं। इधर हाल ही में भ्राताश्री पाल प्रवीण के माध्यम से कुमुद जी ने एक बड़ी ही विरल जिज्ञासा 'आर्य लोक वार्ता' में भेजी थी-"याम, आठ सिद्धियाँ और नव निधियाँ क्या हैं?"

जब कोई जिज्ञासा हमारे पास आती है, तो हमें अनुसन्धान में प्रवृत्त करती है और हमारी ज्ञानराशि को समृद्ध करती हैं। कुमुद जी की इस जिज्ञासा का समाधान हमने शोधकार्य करके पूर्ण किया और यह स्पष्ट किया कि याम क्या है? अष्टयाम क्या है? अष्टछाप क्या है? अष्टसिद्धि और नवनिधि का अर्थ क्या है? बताते चलें के अंकों पर आधारित डॉ.चन्द्रपाल शर्मा के प्रसिद्ध ग्रंथ 'अंक चक्र' में आठ संख्या पर आधारित अनेक वस्तुओं का उल्लेख है किन्तु 'अष्टयाम' वहाँ नहीं मिला। मैंने शर्मा जी का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया। फलस्वरूप शर्मा जी ने 'अष्टयाम' का पूर्ण विवरण भेजकर अपनी योग्यता, सामर्थ्य और औदार्य का परिचय दिया।

'आर्य लोक वार्ता' का यह अंक प्रकाशित हुआ और श्री पाल प्रवीण जी ने कुमुद जी को इसकी जानकारी दी तब वे आकस्मिक दुर्घटना में फ्रैक्चर होने के कारण डॉ.डी.पी.सिंह के आर्थोपैडिक हास्पिटल अलीगंज में थीं और एक बड़े ऑपरेशन का सामना कर चुकी थीं। घर पहुँच कर उन्होंने बड़ी देर तक चलभाष द्वारा अनेकशः धन्यवाद कृतज्ञता ज्ञापन करती रहीं। यद्यपि एक एक शब्द बोलने में उन्हें भारी कष्ट था, साँस भी फूल रही थी किन्तु 'उर अनुराग रहत नहिं रोके'-तुलसी की इस उक्ति के अनुरूप कुमुद जी ने मुझे बार-बार श्रद्धा-स्नेह युक्त धन्यवाद दिया। कुमुद जी को आठ सिद्धि और नवनिधि मिली या नहीं- यह तो मैं नहीं कह सकता किन्तु अस्वस्था की स्थिति में भी उनकी यह भावकातर आभार एवं प्रशस्ति वाणी सुनकर मुझे निश्चय ही अष्टसिद्धि और नवनिधि की प्राप्ति हो गई है।

-सम्पादक

शुभाकांक्षा

आर्य लोक वार्ता के जनवरी अंक में

'जिज्ञासा और समाधान' के लिए मेरी पुस्तक 'भारतीय संस्कृति और मूल अंकों के स्वर' से सामग्री ली गई है। मुझे प्रसन्नता है कि पाल प्रवीण जैसे वयोवृद्ध जिज्ञासु विद्वान् पाठक की जिज्ञासा का शमन होगा। भारतीय संस्कृति के विभिन्न आयामों की जानकारी के लिए यह पुस्तक कोश का काम करेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। सम्पादकीय में एक ज्वलंत समस्या पर सम्पादक ने सीधा प्रहार किया है। सत्य है कि यौवन अविवेकता की ओर भी यदा-कदा ले जाता है किन्तु हिन्दू बालाओं को यह ध्यान रखना चाहिए कि अपने धर्म में उनकी देवी, गृहस्वामिनी, पूज्या, माननीया आदि का जो सम्मान मिलता है, उसे छोड़कर बुर्के की कारा, तलाक की चिन्ता या हलाला के निरादर को सहने क्यों भाग रही हो? शर्मिला टैगोर या करीना कपूर तुम्हारे लिए आदर्श नहीं है क्योंकि तुम सीता, सावित्री, अनसूया की पुत्री हो। स्थायी स्तम्भों में 'वेद प्रवचन', 'मनुष्य का विराट रूप', 'ईश्वर पूजा का वैदिक स्वरूप' हर अंक में ही प्रभावी रहता है। पं.रामचन्द्र देहलवी का तर्कपूर्ण हर अंक में ही प्रभावी रहता है। डॉ.उमाशंकर शुक्ल व दयानन्द जड़िया 'अबोध' के पुरस्कार मिलने पर 'आर्य लोक वार्ता' के सभी पाठकों को प्रसन्न होना स्वाभाविक है। मेरी दोनों विद्वानों को बधाई एवं शुभकामनाएँ। प्रकाशित 'काव्यायन' में प्रकाशचन्द्र 'कविरत्न' व विनोद चन्द्र 'विनोद' की कविताएँ प्रभावी हैं। डॉ.वेद प्रकाश आर्य की पुस्तक 'धधकते पृष्ठ' पर मेरी समीक्षा पिछले अंक में पढ़ चुके हैं। अशोक कुमार पाण्डेय ने पर्याप्त उद्धरण देकर पुनः पुस्तक के महत्त्व का प्रतिपादन किया है। आशा है २०१६ में आर्य लोक वार्ता ज्ञान के प्रचार-प्रसार में निर्णायक भूमिका के रूप में दिखाई देगा।

-डॉ.चन्द्रपाल शर्मा
सहयोग, सर्वोदय नगर, पिलखुआ-245304

***

आर्य लोक वार्ता का नववर्ष अंक मिला।

भारतीयता, देशप्रेम और राष्ट्रीय गौरव से सुशोभित अनूठी कृति 'धधकते पृष्ठ' की श्री अशोक कुमार पाण्डेय 'अशोक' द्वारा रचित समीक्षा पढ़ने को मिली। इससे कृति की महानता सिद्ध है। आलेख में दिए गए काव्यांशों से ज्ञात होता है कि पुस्तक अद्वितीय है। 'करीना की कसक' सम्पादकीय में कुछ फिल्मकारों द्वारा भारतीय संस्कृति का दूषित करने के प्रति चिन्ता विचारणीय है। तैमूर जैसे नाम भारतीयता के पूर्णतः विरुद्ध ही कहे जायेंगे। 'सत्यार्थ प्रकाश वार्ता' तथा 'मनुष्य कब बनता है' धारावाहिकों में उपयोगी ज्ञान दिया गया है। 'शुभाकांक्षा' में विद्वानों पाठकों के विचार हृदय पर छाप छोड़ते हैं। यह आपके कुशल सम्पादन का ही जादू है कि पत्र में निष्पक्ष और स्वतंत्र प्रतिक्रियाओं को स्थान दिया जाता है। सुभाष जयन्ती पर कविवर प्रकाश चन्द्र कविरत्न की कविता सुभाष बाबू की अटूट देशभक्ति का परिचय देती है। 'आह भूख से मरकर लाशों को सागर में फिंकते देखा' जैसी पंक्तियों ने हृदय को विचलित कर दिया। आज देश के उद्धार के लिए सुभाष जैसे सपूतों की ही आवश्यकता है। अन्य कविताओं में अखिलेश निगम, गौरीशंकर वैश्य विनम्र, नमिता वैश्य, रामा आर्य रमा, अबोध, शितिकण्ठ की कविताएं स्तरीय और समयानुकूल लगीं। विनोद चन्द्र पाण्डेय विनोद की कविता 'कोटि नमन' के साथ विडम्बना यह हो गई कि मेरे पत्र लिखने की तिथि ०७.०२.१६ को इस महारथी कवि का देहावसान हो गया है। यह कोटिनमन शीर्षक अब उन्हीं को समर्पित करना पड़ रहा है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे। उनकी यह कविता मेरे पास धरोहर रहेगी। ब्रह्मलीन स्वामी आत्मबोध सरस्वती जी को अर्पित आपकी और डॉ.सुधाकर द्विवेदी जी की शब्द श्रद्धांजलि बोधपूर्ण है।

-सविता वाणी
चौक, गौरीगंज, जनपद-अमेठी(उ.प्र.)

***

'आर्य लोक वार्ता' जनवरी, २०१६

अंक आद्योपान्त देखा गया। 'गणतंत्र दिवसीय' यह अंक अपनी विशिष्ट पहचान प्रस्तुत करता है। इसके मुखपृष्ठ पर मर्मी साहित्यकार, कुशल कवि, विदग्ध वक्ता और वरेण्य सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य कृत 'धधकते पृष्ठ' शीर्षक काव्य कृति विषयक समीक्षात्मक आलेख है। इस कृति में संकलित कविताएँ निस्सन्देह हमारे राष्ट्र-गौरव को जगाने, उद्वेलित करने में सर्वथा सक्षम हैं, क्योंकि उनमें पांडित्य-प्रदर्शन अथवा किसी प्रकार शब्दाडम्बर का घटाटोप नहीं, वरन् कवि हृदय का राष्ट्र-प्रेम सहज स्वाभाविक ढँग से उच्छलित हुआ है। इस कृति की समीक्षा हिन्दी के प्रतिष्ठित वरिष्ठ छन्दकार एवं 'ब्रज कुमुदेश' त्रैमासिकी के सम्पादक श्री अशोक पाण्डेय 'अशोक' द्वारा बड़े मनोयोग से की गयी है। उनका यह कथन सर्वथा समीचीन है कि 'ये मात्र कविताएँ ही नहीं, बल्कि शौर्य की गाथाएँ हैं जिसमें भारतीय अतीत के गौरवपूर्ण अंशों को लेकर आज के समाज को झकझोर कर जगाने का प्रयास किया गया है।...वीर-रौद्र आदि काव्य-रसों से परिपूर्ण ऐस कृति कविवर डॉ.वेद प्रकाश आर्य को पाठ्यक्रमों मं निहित पूर्व में हुए नामी अनेक कवियों की श्रेणी में खड़ा करती है।' संभवतः राष्ट्रीय-भावना के आज के क्षरण-काल में उसे पुनरुज्जीवित करने के लिए ऐसी कालजयी रचनाओं की महती आवश्यकता है। इसके लिए कृतिकार सर्वथा अभिनन्दन का पात्र है।

सम्पादकीय में प्रसिद्ध अभिनेत्री 'करीना की कसक' के माध्यम से सम्पादक ने बड़े कौशल से विवेक-क्षमता की गौरव वृद्धि के लिए उच्चस्तरीय शिक्षा को अनिवार्य घोषित किया है। 'दयानन्द चरितम्' तो महर्षि की प्रभा का प्रमाण देता है। 'जिज्ञासा और समाधान' में अष्ट-याम, अष्ट-सिद्धियों एवं नव निधियों का परिचय दिया गया है, जो ज्ञानवर्द्धक है। वैदिक कर्म-काण्ड के मर्मी पं.सत्यदेव सैनी विषयक स्मृति-आलेख उत्प्रेरक है। शुभाकांक्षा में पाठकीय प्रतिक्रियाएँ हैं। 'अक्षर लोक' स्तंभ में कतिपय प्रकाशित पुस्तकों-पत्रिकाओं का संकेत है। 'मनुष्य का विराट रूप' तथा 'ईश्वर की पूजा का वैदिक स्वरूप' आलेख गंभीर और पदे-पदे मननीय है। 'काव्यायन' के अन्तर्गत राष्ट्रीय भावोद्-बोधनपरक सठोरक रचनाएँ हैं। 'लखनऊ समाचार' में राष्ट्रीय बलिदानी, आर्य समाजी गतिविधियों, साहित्यिक विशिष्ट उपलब्धियों आदि की सूचनाएँ हैं। अंतिम पृष्ठ स्वामी आत्मबोध सरस्वती जी महाराज के असाधारण व्यक्तित्व को रेखांकित करती डॉ.वेद प्रकाश आर्य तथा डॉ.सुधाकर द्विवेदी जी की क्रमशः हिन्दी एवं संस्कृत की दो रचनाएँ हैं।

समग्रतः आर्य लोक वार्ता का यह अंक भी पूर्ववत् विशेष स्वागत योग्य है। साहित्य, संस्कृति, धर्म और सामाजिक राष्ट्रीय-चेतना इस अंक में बड़े प्रभावी रूप में दृष्टिगत होती है। ऐसे सुष्ठु संपादन हेतु हर्दिक बधाई।

-डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'
त्रिवेणी नगर, डालीगंज क्रासिंग, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' जनवरी अंक में

आपकी कालजयी कृति 'धधकते पृष्ठ' की प्रख्यात साहित्यकार एवं 'ब्रज कुमुदेश' पत्रिका के यशस्वी सम्पादक अशोक कुमार पाण्डेय 'अशोक' की विद्वत्तापूर्ण समीक्षा पढ़कर सगर्व रोमांचित हो उठा। 'धधकते पृष्ठ' का शब्द-शब्द है ही इतना प्रभाव पूर्ण है कि अन्तर्मन ओज-शौर्य से भर उठता है। मुझे आपकी यह पुस्तक पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है किन्तु बार बार पढ़ने के पश्चात् मन नहीं भरता। इसमें चयनित कुल बारह कविताएँ ही बारह सर्गों में निबद्ध महाकाव्य का आकार देने में समर्थ हैं। श्री अशोक जी की लेखनी को शतशः नमन। 'विनय पीयूष' में शतायु जीवन जीने का मंत्र सरल शब्दों में दिया गया है, 'करें कर्म निष्काम' तथा 'नहीं चलें अन्यथा पथ पर' कर्मनिष्ठा से सद्पथ पर चलते रहने की सुप्रेरणा देता है। आत्मीय अमृत खरे को साधुवाद। सम्पादकीय में आपने 'करीना' के माध्यम से उच्चशिक्षा की महत्ता तथा गौरवशाली वैदिक संस्कृति की उपादेयता को भलीभांति रेखांकित किया है, यह भारतीय जन-मन के लिए प्रेरणादायी है। इस विषय पर हिन्दू मानस को चिन्तन मनन की आवश्यकता है। पं.सत्यदेव सैनी का जीवन-चरित्र अनुकरणीय है। 'जिज्ञासा और समाधान' में ज्ञानवर्द्धक जानकारी प्रदान की गयी है। इससे पाठकों का बहुत भला होगा। 'शुभाकांक्षा' सदैव की भांति सार्थक चिन्तन देने में सफल है। 'काव्यायन' में प्रकाशचन्द्र कविरत्न की कालजयी कविता के साथ अन्य स्वनामधन्य कवियों की रचनाएँ सरस और समसामयिक हैं। कुशल रचना-चयन हेतु आपका प्रयास प्रशंसनीय है। पत्र के अन्त में आर्य पर्वों की तालिका वर्ष भर के लिए संग्रहणीय है। आओ! प्रकृति की वासंती छवि को आत्मसात करें-

धरती ने शृंगार किया है,
आए दिन मधुमास के।
खेतों में सरसों फूली है,
झण्डे गड़े पलाश के।
तितली-भौरों का शुभनर्तन,
लुभा रहा पिक पंचमस्वर।
रंग बिखेर दिए फूलों के,
हास, प्यास, उल्लास के।।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ

***

अक्षर लोक

फ्राडियर और नीम पागल (रोचक संस्मरण)
रचनाकार : महेशचंद्र द्विवेदी
प्रस्तुति : हार्ड बाउण्ड/पृष्ठ संख्या १०८
मूल्य : दो सौ तीस रुपये
प्रकाशक : हिन्दी साहित्य निकेतन,
१६, साहित्य विहार, बिजनौर (उ.प्र.)

प्रकाशक के शब्दों में 'फ्राडियर और नीम पागल' पुस्तक में वरिष्ठ साहित्यकार महेशचंद्र द्विवेदी के 'रोचक एवं तत्वज्ञान वर्धक संस्मरण' संग्रहीत हैं। वास्तव में पुस्तक की समस्त रचनाएँ इतनी रोचक हैं कि एक बार पढ़ना शुरू करने के बाद पुस्तक को पूरा पढ़े बिना छोड़ा नहीं जा सकता। जीवन का 'तत्वज्ञान'(!) तो इनमें कूट-कूट कर भरा हुआ है। लेखक ने परिवार, पड़ोस, गाँव, शिक्षा-जगत, कोर्ट-कचहरी, सरकारी नौकरी, प्रशासन, राजनीति, चुनाव आदि आदि अनेक क्षेत्रों के 'फ्राडियरों' और 'नीम पागलों' के ऐसे शब्द-चित्र बनाये हैं, जो हँसाते भी हैं और अन्ततः रुलाते भी हैं। लेखक ने अत्यन्त प्रचलित हो चुके 'फ्राडियर' शब्द को 'ग्रामिश' भाषा का शब्द घोषित किया है अर्थात् 'ग्रामीण' और 'इंग्लिश' भाषा का फ्यूजन!

अपनी पैनी दृष्टि, दुधारी भाषा और तिर्यक संधान के चलते 'फ्राडियर और नीम पागल' के मारक व्यंग्य निश्चय ही लेखक महेशचंद्र द्विवेदी को स्वनामधन्य हरिशंकर परसाई और शरद जोशी की पंक्ति में ला खड़ा करते हैं।

विडम्बना (कहानी संग्रह)
रचनाकार : प्रमोद पारवाला
प्रस्तुति : पेपरबैक/पृष्ठ संख्या १०६
मूल्य : एक सौ रुपये
प्रकाशक : अंजलि प्रकाशन
२६२, कहरवान, गली आर्य समाज,
बिहारीपुर, बरेली—२४३००२(उ.प्र.)

'विडम्बना' की कथाकार प्रमोद पारवाला की पन्द्रह कहानियों का संग्रह है। लेखिका का हृदय अत्यन्त संवेदनशील है और दृष्टि अत्यन्त व्यापक। इन कहानियों में घर-परिवार, समाज और प्रकारान्तर से समस्त मानवता प्रतिबिम्बित होती दिखायी देती है। अतीत से क्षुब्ध, वर्तमान में संघर्षरत और भविष्य के प्रति चिन्तित मनुष्य की पीड़ा इन कहानियों का मुख्य स्वर है। कहानियों के माध्यम से लेखिका व्यक्ति और समाज की संवेदनाओं, विद्रूपों, विडम्बनाओं और आडम्बरों के मूल तक पहुँचने और उनका समाधान ढूँढने का जबरदस्त प्रयास करती दीखती हैं। यह विशेषता इनकी कहानियों को एक अलग पहचान दिलाती है। कहानियों में रुचि रखने वाले पाठकों को 'विडम्बना' कहानी संग्रह अवश्य पसन्द आयेगा।

कैकेयी चेतना—शिखा (उपन्यास)
रचनाकार : डॉ.स्नेह ठाकुर
प्रस्तुति : हार्डबाउण्ड/पृष्ठ संख्या २१२
मूल्य : तीन सौ रुपये
प्रकाशक : स्टार पब्लिकेशंस प्रा.लि.,
४/५बी, आसफ अली रोड,
नई दिल्ली—११० ००२

कैकेयी रामकथा का जाना-पहचाना खल-चरित्र है। पुत्र भरत को सत्ता दिलाने के लिए षडयंत्र कर वह राम को चौदह वर्ष का वनवास दिला देती है। राम पत्नी सीता और अनुज लक्ष्मण के साथ वनवास पर चले जाते हैं। रावण सीता का हरण कर लेता है। राम को रावण से युद्ध कर उसे पराजित करना पड़ता है। न कैकेयी राम के लिये वनवास की मांग करती, न उन्हें चौदह वर्ष के लिये दुख, पीड़ा, संघर्ष और कष्ट झेलना पड़ता।

अब दूसरा पक्ष देखिये। राम को तो वनवास करना ही करना था। अयोध्या में बैठे-बैठे चुनौती बन गयी राक्षसी सत्ता को न तो समझाया जा सकता था, न उसे चुनौती दी जा सकती थी। राक्षसी-सत्ता को बिना सतर्क किये, बिना घोषित चुनौती दिये, उसे भ्रम में रखते हुए 'वनवास' के लिये कोई तो बहाना अयोध्या की सत्ता को चाहिये था।...और यह बहाना कैकेयी उपलब्ध करा देती है। घोषित रूप से भरत को राजगद्दी दिलाने के लिये राम का 'वनवास' करा देती है। इसके लिये उसे न केवल तत्कालीन अयोध्या में अपयश और निन्दा का पात्र बनना पड़ता है, वरन् आज तक वह रामकथा की खलनायिका बनी हुई है।

यह दूसरा पक्ष कैकेयी को न केवल प्रखर कूटनीतिज्ञ सिद्ध करता है वरन् अयोध्या के राजकाज में उसके योगदान को रेखांकित करता है। अपमान और अपयश सहकर भी वह वही करती है, जो अयोध्या के राज, समाज और धर्म-संस्कृति के लिये अत्यावश्यक होता है। कैकेयी नींव का वह पत्थर बन जाती है जिस पर युग-धर्म की भव्य इमारत खड़ी होती है।

'कैकेयी चेतना-शिखा' शीर्षक उपन्यास में डॉ.स्नेह ठाकुर ने 'कैकेयी' के प्रति चली आ रही पारम्परिक खलनायिका की दृष्टि और दूसरी त्याग की मूर्ति का पक्ष खंगालने का सुन्दर प्रयास किया है।

उपन्यास निश्चित ही पठनीय और मननीय है।

धारावाहिक-90 (समापन किस्त)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

उपर्युक्त कथा या किम्वदन्ती का सार यह है कि जबतक भगवान् की कृपा, बड़े लोगों का आशीर्वाद, सज्जनों की सहानुभूति आपको न मिले, तबतक आप किसी महत्कार्य में सफलता नहीं पा सकते। सिद्धि का श्रेय स्वयं न लेकर ईश्वर एवं अपने शुभचिन्तकों को देना चाहिये। उनकी सद्भावनायें जब आपके साथ रहती हैं तभी आप कुछ करके दिखा सकते हैं। उन्हें आप अहंकार से नहीं प्राप्त कर सकते। अहंकार त्यागिये और मन में यह भावना रखिये कि हम जो-कुछ भी कर सकते हैं, भगवान् के अनुग्रह, गुरुजनों के प्रसाद और सज्जनों के सहयोग से ही कर सकते हैं। इस भाव्रना से ही आपका कार्य सिद्ध हो सकता है। यह बानरों का ही नहीं, संसार के अनेक महापुरुषों का अनुभूत प्रयोग है।

७-योग्यता का डंका मत पीटिये

हनुमान जी के सम्बन्ध में एक लोक कथा है। लंका-विजय के बाद हनुमान जी अपनी माता अंजना से मिलने गये। अंजना एक वन में कुटी बनाकर रहती थी। उसने बहुत दिनों बाद घर आये हुए पुत्र को बड़े प्रेम से गल लगाया और कुशल-समाचार पूछा। हनुमान जी अपनी माँ से रामायण का सारा हाल बताने लगे। उन्होंने अपने शौर्य-पराक्रम का भी बारम्बार वर्णन किया। उसे सुनकर अंजना ने कहा-बेटा, मुझे तो यह लगता है कि तुम अपने स्वामी के काम नहीं आये! हनुमान बोले-माँ, मैंने अकेले रावण की लंका को तहस-नहस कर दिया; इसके बाद मैंने राम के साथ रावण, कुम्भकर्ण मेघनाद जैसे अतिवीरों से घोर संग्राम किया; मेरी सहायता से ही राक्षसों का नाश हुआ है। राम स्वयं मेरे बल विक्रम की सराहना करते हैं।

अंजना ने भीतर से सन्तुष्ट किन्तु बाहर से रुष्ट होकर कहा-तुम बारम्बार कहते हो कि मैंने यह किया, मैंने वह किया, परन्तु यह नहीं देखते कि तुमने क्या नहीं किया। उसे भी देखो तो तुम्हें ज्ञात होगा कि तुमने उतना नहीं किया जितना तुम्हें करना चाहिये था या जितना तुम कर सकते थे। तुमने तो राम का कुछ भी काम नहीं किया। इसका प्रमाण यही है कि तुम्हारे रहते हुए भी राम को सेतु बाँधकर लंका में जाना पड़ा, घोर कष्ट सहकर राक्षसों से युद्ध करना पड़ा। तुम्हारी तारीफ तो तब थी जब तुम राम को सारे झंझटों से छुट्टी दे देते। क्या तुममें इतनी शक्ति नहीं थी कि तुम अकेले लंका में जाकर अन्यायी रावण से भिड़ जाते और उसे अपने बाहुबल से परास्त करके सीता को उबार लाते? जब तुम ऐसा नहीं कर सके तो व्यर्थ के लिये अपने बल-पौरुष की बड़ाई क्यों करते हो? तुम्हारे पुरुषार्थ को धिक्कार है! उस माता को धिक्कार है, जिसका पुत्र अपने स्वामी के सम्मान की रक्षा पूर्ण रूप से नहीं कर सका। अब अपनी प्रशंसा मत करो।

हनुमान परम बुद्धिमान् थे, इसलिये वे तुरन्त सचेत हो गये। उन्होंने माता के अभिप्राय को समझ लिया। अभिप्राय यह था कि कृती को न तो मन में कर्त्तव्य का अभिमान रखना चाहिये और न स्वमुख से अपना गुण-गान करना चाहिये। अंजना अपने पुत्र के हृदय में इस भावना को निकालना चाहती थी कि उसने राम का बहुत बड़ा काम किया है। उसने उचित ढंग से हनुमान को सावधान कर दिया।

कार्य-विशेष की सफलता के बाद भी जनता के सामने स्वयं अपनी योग्यता का विज्ञापन करने से मनुष्य की अयोग्यता प्रकट होती है।

अन्तिम बात

इस ग्रन्थ में, आत्मपूर्णता और लोक यात्रा की सफलता के लिए मनुष्यमात्र को जिन आवश्यक विषयों की जानकारी होनी चाहिए, उनकी सार-सामग्री सरल ढंग से प्रस्तुत की गई है! एक साधारण मनुष्य में कितनी और कैसी विलक्षण क्षमता होती है, सर्व-सुलभ साधनों की सहायता और अपनी ही साधना से प्रत्येक व्यक्ति किस प्रकार अपने जीवन स्तर को ऊँचा उठाकर कुछ का कुछ हो सकता है, जीवन की सद्गति का रहस्य क्या है, पुरुषार्थी को अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए विघ्न-बाधाओं के बीच से किन मार्गों पर और कैसे आगे बढ़ना चाहिए, मनुष्यता का स्वरूप और महत्व क्या है, किसी भी प्रकार का अधिकार कैसे मिलता है, लोकप्रियता और प्रतिष्ठा की प्राप्ति कैसे हो सकती है, आचार विचार और सम्पूर्ण व्यक्तित्व को क्यों और कैसे निर्दोष रखना चाहिए, महा पुरुषों के चरित्र से क्या सीखा जा सकता है-ऐसे अनेक प्रश्नों का प्रामाणिक एवं सन्तोषजनक उत्तर इसमें मिलेगा। साथ ही पुस्तक में निर्भयता, विनय-नम्रता, सुशीलता, दान-परोपकार-सेवा और सत्संगति आदि के सम्बन्ध में बहुत सी मनोवैज्ञानिक तथा व्यावहारिक ज्ञान की बातें दी गई हैं। संक्षेप में, मैंने उन सद्गुणों पर प्रकाश डालने की चेष्टा की है जिनके द्वारा मानव-जीवन सुसंस्कृत, सशक्त और मर्यादित होता है।

अमेरिका के सुप्रसिद्ध विचार-पत्र 'रीडर्स डाइजेस्ट' के जुलाई १९४९ के अंक में मनोविज्ञान की यह परिभाषा छपी थी-जिन बातों को आप पहले से जानते-बूझते हैं, उन्हींकी जो शास्त्र ऐसी क्लिष्ट व्याख्या करता है, जिसे आप आसानी से न समझ सकें, वह मनोविज्ञान है-"Psychology--the science that tells you what you already know, in words you can't understand." पाण्डित्य-प्रदर्शन का यह ढंग बहुत प्रचलित है। मैंने इसको नहीं अपनाया है और यथाशक्ति जीवन-सम्बन्धी विस्तृत, गंभीर और नीरस ज्ञान को भी सरल, सुबोध तथा सरस बनाने का यत्न किया है। इस कार्य में मैंने उन ढर्रावादियों का भी अनुकरण नहीं किया है, जो प्रत्येक बात को लेकर किसी न किसी 'वाद' के घेरे में चक्कर लगाते हैं। मुझे, जो कुछ कहना था, उसे मैंने सीधे-सादे ढंग से कहा है और सैकड़ों सार-गर्भित सूक्तियों से प्रमाणित किया है। इस पुस्तक में स्थान-स्थान पर दृष्टान्तों और कथाओं का उपयोग इस उद्देश्य से किया गया है कि एक तो उससे ठोस मानसिक आहार भी सरस एवं सुभोग्य हो जाता है, दूसरे ज्ञान का व्यावहारिक प्रयोग बड़ी सुगमता से ज्ञात हो जाता है। किसी को कोरे उपदेशों से सज्ञान बनाना तो उसे ठोक-पीट कर वैद्यराज बनाना है। मैंने मृदु उपाय से काम लिया है। आशा है, पाठकों को यह प्रिय लगेगा और वे इस ग्रन्थ में प्रस्तुत स्वाध्याय की सामग्री का भली-भाँति उपयोग तथा उपभोग करेंगे।

बसंत-निवास, -आनन्द कुमार
सुलतानपुर, अवध।
30.03.1952

व्याख्यान माला-6

ईश्वर-पूजा का वैदिक स्वरूप

-शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र देहलवी-

अब भगवान् के बारे में भी विचार कर लीजिए। वह भी पूर्ण है। उसे भी किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है। He needs nothing for himself. वह तो आवश्यकता से खाली है He is perfect. वह पूर्ण है। तो अब प्रश्न यह है कि पूजा कैसे की जाय? उसकी सेवा कैसे की जाय?

भगवान् की पूजा, सेवा या खिदमत का तरीका यह है कि जो ईश्वर के गुण हैं, जिनके धारण करने से व्यक्ति का उत्थान हो सकता है, उन्नति हो सकती है अथवा परमात्मा से मिलकर श्रेष्ठता हो सकती है, उन गुणों को अपने अन्दर धारण करें और अपने को ईश्वर सा अर्थात् ईश्वर के गुणों से युक्त बनाने का प्रयास करें।

ईश्वर के गुणों का वर्णन विस्तार से वेदों और शास्त्रों में किया हुआ है। उन्हें वहाँ से जानकर अपनाएँ। यहाँ उनके वर्णन की आवश्यकता नहीं है।

जीवात्मा के अन्दर ग्रहण करने की योग्यता विद्यमान है। जीवात्मा ईश्वर के गुणों को ग्रहण करने की क्षमता रखता है। वह दयालु बन सकता है, न्यायकारी भी बन सकता है। प्रातः और सायं संध्या करके, बनने की चेष्टा करें। और आचरण भी वैसा ही करें।

संध्या क्या है? Introspection है। आत्म-निरीक्षण है। प्रातः और सायं अपना आत्म-निरीक्षण करिए, देखिए कि जीवन के दैनिक व्यवहार में कहाँ-कहाँ कमी है, उन्हें निकालिए और ईश्वर के गुणों को धारण कीजिए।

लोग कहा करते हैं, जी! बिना मूर्ति या चित्र के गुणों को कैसे याद करें? यही तो विचारणीय चीज है। गुणों को याद करने के लिए चित्र की आवश्यकता नहीं है। अभी आपको समझ में यह बात एक उदाहरण से आ जाएगी। आप जितने भी यहाँ बैठे हैं भली प्रकार जानते हैं। आजकल बेईमानी, बदमाशी, छली का अत्यन्त जोर है। प्रत्येक मनुष्य दूसरे को ठग करके अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। इससे किसी को भी इन्कार नहीं। सब लोग इन बुराइयों से परिचित हैं। जब खूब परिचित हैं तो क्या भ्रष्टाचार का या चोरी का चित्र खींच सकते हैं? नहीं खींच सकेंगे। दुनिया का बड़े से बड़ा चित्रकार भी चोरी या बेईमानी का चित्र नहीं खींच सकता है और न बना सकता है! जब इनकी तसवीरें नहीं खींची जा सकतीं और बिना तसवीरों के आप इन्हें जानते हैं। क्योंकि यह मानसिक चीजें हैं, बुद्धि से जानने की चीजें हैं। बुद्धि से सोची और विचारी जाती हैं। किसी के माल को बगैर उसकी इजाजत के अपने तसर्रुफ में लाना चोरी है। इसकी तस्वीर नहीं खींची जा सकती है। इसकी कागज पर कोई तस्वीर नहीं खींची जा सकती। किन्तु दिमाग में तो खिंची हुई है। आपने समझ लिया चोरी को कि चोरी यह है। अर्थात् गुणों की बगैर तस्वीर के जान लेने की जीवात्मा में योग्यता है। गुणों को हम जहनी नक्शे से जान लेते हैं। बेईमानी या ईमानदारी, बदकारी और व्यभिचार सब पहचानी जाती है। तो इसी तरह परमात्मा के गुणों को भी मानसिक चित्रावली से जाना या पहचाना जा सकता है। परमात्मा कैसा है? न्यायकारी है। किसी के साथ पक्षपात नहीं करता चाहे कोई कितना ही बड़ा शख्स क्यों न हो। There is no respect of persons with God. पमात्मा किसी भी शख्सियत से प्रभावित नहीं होता चाहे वह कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो क्योंकि वह सर्वशक्तिमान् है। वह तो जैसा कर्म कोई करेगा उसको वैसा ही फल देगा।

भगवान् के इस गुण को आप धारण करें। जहाँ न्याय का समय आ जाय डरें नहीं, घबराएं नहीं, अभियुक्त के व्यक्तित्व से प्रभावित न हों बल्कि साफ कहें कि अमुक व्यक्ति दोषी है। नौशेरवां आदिल अपने न्याय के लिए प्रसिद्ध थे क्योंकि उसने अपने बेटे को भी नहीं छोड़ा, फांसी पर लटका दिया। यहाँ पर कौम का सवाल नहीं है। यहाँ पर तो नेकी और गुणों से मतलब है। चाहे किसी भी धर्म का हो। भलाई सब स्थानों पर भलाई ही है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ईश्वर के गुणों को ध्यान करने के लिए मूर्ति की आवश्यकता नहीं है। और यदि मूर्ति से ध्यान एकाग्र करने की आदत पड़ी हुई है तो अपने पुत्र या पुत्री को सामने बिठाकर उनके द्वारा ध्यान क्यों नहीं एकाग्र करते? वह तो बड़ी कीमती चीज है। उसमें ध्यान एकाग्र कीजिए। ईश्वर का बनाया हुआ है आपका पुत्र जिसके लिए आपको प्रत्येक क्षण चिन्ता बनी रहती है कि रोगी न हो जाय, अस्वस्थ न हो जाय। तो उसी में अपने मन को केन्द्रित कर लीजिये। यदि आप उस बच्चे के एक अंग के बारे में सोचेंगे तो भगवान् की कला की थाह न पा सकेंगे। मूर्ति में ध्यान केन्द्रित नहीं होता प्रत्युत ध्यान इधर उधर हो जाता है। कभी आंख में, कभी कान में, कभी कहीं और कभी कहीं। तो मूर्ति में मनुष्य का ध्यान केन्द्रित हो ही नहीं सकता।

ध्यान का लक्षण करते हुए लिखा है-'ध्यानं विर्विषयं मनः।' मन के निर्विषय हाने को ही ध्यान करते हैं अर्थात् ध्यान तभी होता है जब मन में कोई विषय न हो। रात को सोते समय यदि चिन्ताएं होती हैं तो नींद नहीं आती और चिन्ताएं दूर होते ही नींद आ जाती है। यह पता भी नहीं चलता कि नींद कब आ गई। इसी प्रकार ध्यान भी तभी होता है जब मन विषयहीन हो जाय। मैं नहीं कह रहा हूँ। सांख्य के रचयिता कपिल मुनि ने लिखा है। यदि मन में विषय आ गए तो मनुष्य विषयों के विचार में फंस जाएगा। जैसे मनुष्य किसी सुन्दर रूप को देखने के बाद कभी उसकी आँख के बारे में सोचता है, कभी नाक के बारे में, कभी बालों आदि के बारे में। इस प्रकार विचारों की एक शृंखला चल पड़ती है। तो मन में मूर्ति का ध्यान करने से मन उसमें केन्द्रित नहीं होता प्रत्युत अस्थिर हो जाता है, ध्यान बहुत-सी चीजों में बंट जाता है। इसलिए मूर्ति को सामने रखने से भगवान् का ध्यान कभी नहीं हो सकता।

अपना मन भगवान् कके गुणों पर केन्द्रित करो, बड़ी गहराई से विचार करो उन पर, और फिर उनके जैसा अपने को बनाने का यत्न करो। उपर्युक्त उदाहरणों व स्पष्टीकरणों से मैंने ईश्वर पूजा के लिए मूर्ति की आवश्यकता प्रकट की है।

सेवा कैसे की जाय? कोई चीज उसे देकर उसकी पूजा हो सकती है? मैं ने आपको अपने व्याख्यान में बताया है कि ईश्वर और प्रकृति दोनों

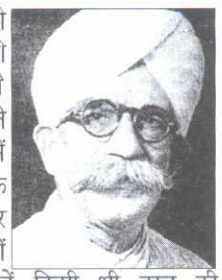

पूरे हैं। इन्हें किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं है। तो इन दोनों की सेवा इन्हें कोई वस्तु देकर नहीं होगी बल्कि अपने लाभार्थ वस्तुएं इनसे प्राप्त करके इनकी सेवा होगी। अपूर्ण की सेवा, उससे कुछ लेकर व उसे कुछ देकर होती है और पूर्ण की सेवा उससे कुछ (अपने लाभ के लिए व उन्नति के लिए जितना आवश्यक है) लेकर हुआ करती है।

मुझ से, जो मेरे पास अधिक है उनमें से ले लीजिए। और जो मेरे पास नहीं है, आपके पास है, वह मुझे दे दीजिए। मेरा काम तो ऐसे ही चल रहा है क्योंकि मैं अपूर्ण हूँ? पूर्ण नहीं हूँ। तो मुझ में जो अधिक है लोग मुझ से ले लेते हैं और जो अन्यों में अधिक है मैं अपनी आवश्यकतानुसार ले लेता हूँ। अभी मैंने एक गाना इन भजनीक महाशय से ले लिया क्योंकि इनके पास था और मेरे पास नहीं था। यदि मेरे पास कोई वस्तु हो और उनके पास न हो तो वे मुझ से ले लें। तो मेरा काम लेन देन से चलेगा। किन्तु भगवान् का काम लेन-देन से नहीं प्रत्युत केवल उससे लेने ही लेने से चलेगा, क्योंकि वह पूर्ण है। और उसके पूरेपन में कोई अन्तर नहीं आता। वह सब को दिए जो रहा है। क्यों दे रहा है? अपनी सत्ता को सफल कर रहा हे। यदि उसकी सत्ता निरर्थक हो तो वह निकम्मा साबित होगा। इसलिए परमात्मा कैसा है? वह बाकार है। तो परमात्मा की सेवा हम उससे कुछ लेकर करेंगे।

यदि हम उसे कुछ देना चाहें तो भी क्या दें? उसके पास तो सारी चीजें हैं। वह अपार भण्डार (प्रकृति) का स्वामी है। यदि चाहें तो भी हम उसे कुछ दे नहीं सकते क्योंकि हमारे पास अपना है क्या जो देंगे? इसलिए भगवान् से उसके गुण ग्रहण करके हम ईश्वर की पूजा कर सकते हैं।

प्रकृति से भी हम ले रहे हैं, लेते आए हैं और लेते रहेंगें? क्योंकि वह भी पूर्ण है। आज की आधुनिक साज-सज्जा की सामग्री, रेडियो, ग्रामोफोन, टेलीविजन, रेलगाड़ी, हवाई जहाज आदि सभी प्राकृतिक पदार्थ हैं जो हमने प्रकृति से प्राप्त किए हैं।

प्राकृतिक वस्तुओं के दो प्रकार के प्रयोग या उपयोग किए जा सकते हैं। सदुपयोग (Right use) और दुरुपयोग (Wrong use) यदि हम सही उपयोग करेंगे, हमारे लिए वस्तुएं लाभकारी होंगी। यदि दुरुपयोग करेंगे तो हमें हानि हो जाएगी।

दुरुपयोग के घातक परिणाम होते हैं। जहर शब्द के लिए संस्कृत साहित्य में 'विष' विप्रयोग शब्द का प्रयोग होता है। और विष शब्द का अर्थ है दुरुपयोग, अनुचित उपयोग, Wrong use। किसी भी चीज का गलत इस्तेमाल घातक हो सकता है। तो वस्तुओं का दुरुपयोग उनको हलाहल या जहर बना देता है।

(क्रमशः)

काव्यायन

ऋषिबोध पर्व

देव दयानन्द

श्री प्रकाश जी व्याकुल

ऐसा महाराज, आज कौन है वसुन्धरा पै,
त्याग पितु मात ग्राम धाम, सुख साज को।।
सत्य के पुजारी, क्रान्तिकारी, ब्रह्मचारी बीर,
वाह रे, अमीर धीर धन्य तेरे काज को।।
एक ने अनेक ही, उखाड़ के असत्य पन्थ,
मन्थ मन्थ ग्रन्थ, वेद निधि दे समाज को।।
किए उच्च कार्य, अनिवार्य आचार्य ने,
आर्य ने आर्यों की बचा लिया लाज को।।
रोग थे अनेक, लोग सोग से हुए भ्रान्त,
प्रान्त नगर ग्राम थे, तमाम फंसे फन्द में।।
बन्द किए द्वार मति मन्द छल छन्दियों ने,
धर्म प्रतिद्वन्दियों ने, दबाया था द्वन्द्व में।।
वेद के विरुद्ध, सब अशुद्ध, कार्य कलाप,
कण्ठी छाप, पाप ताप, कालिमा से चन्द में।।
जात पात छूतछात, धात वात बात में ही,
जागी करामात देख देव दयानन्द में।।

('सत्यार्थ प्रकाश कवितानुवाद' से)

शिव का विषपान

अनूप शर्मा

ज्याला भरा विष का, गरल का, हलाहल का
नाश का विनाश का प्रलय का भीत भारी का।
लाया गया सामने जभी था व्योमकेशजू के
उबल रहा था वेश धारे धूमधारी का।
कम्पमान भूमि थी, प्रकम्पमान अम्बर था-
वेपमान था दिल दिमाग असुरारी का।
काल नाशने को बढ़ा, ताप त्रासने को बढ़ा
हाथ बढ़ा प्याले पै जभी था त्रिपुरारी का।।
भूली मुंडमाला, मुंडमाला मौलि मंडित के,
युगल त्रिलोचन के लोचन उघरिगे।
बैल का, बधम्बर का, विजया का, वासुकी का
गौरी का, गणेश का, विशेष ध्यान धरिगे।
कामना विराजी एक लोकहित साधना की-
तुरत अनूप भाव सकल बिसरिगे।
सारा जग काला पड़ा, सबद दुशाला पड़ा
हाला पड़ा विश्व, शंभु हाला पान करिगे।।

ऋतु वर्णन

माघ

रामा आर्य 'रमा'

पूस गया पूसी हुई, लगा महीना माघ।
सूरज है चढ़ने लगा, कहे घाघिनि, घाघ।।
कल्पवास के हित 'रमा', आते गंगा तीर।
दान पुण्य है व्रत कथा, पीते गंगा नीर।।
करें परिक्रमा तीर्थ की, काशी कुंभ प्रयाग।
अपनी है ढफली 'रमा', अपने-अपने राग।।
देख वसन्ती पवन को, मचल उठे ऋतुराज।
सजा रही है कोकिला, सप्त स्वरों का साज।।
'रमा' पंचमी शुक्ल की, हुआ बसन्ती सर्व।
करते पूजा अर्चना, माँ वरदायनि पर्व।।
'रमा' चौथ संकट हरण, हुई अमावस मौन।
आई पूनम माघ की, किया माघ ने गौन।।

-417/10, निवाजगंज, चौक, लखनऊ

कैसा हो वसन्त

डॉ. कैलाश निगम

देश लिये बहुत से
मधुमास मदिराये
कैसा हो बसंत
वीरें का न भूल जाना है।
अर्थी उग्रवाद की
उठानी हमें मिल कर
केशर क्यारियों को
फिर महकाना है।
लक्ष्य अपना है
बिजली गिराना उन पर
जिन्होंने बनाया
इस देश को निशाना है।
अस्मिता हमारी धूल
करने को जो जुटे हैं
उनको पछाड़ कर
धूल चटवाना है।।

-4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

चन्दन सा महके मन मेरा

साधुशरण वर्मा 'सरन'

ऐसी गन्ध बिखेरे माँ तू
चन्दन सा महके मन मेरा।
रस की धार छलकती अविरल
फिर भी मैं प्यासा का प्यासा।
पग पग जितनी दूर चलूँ मैं
लगती केवल हाथ निराशा।
ऐसी स्नेह किरन बरसा दे
चन्दा सा चमके मन मेरा।।
भौतिकता की होड़ लगाये
आज छल रहे महल दुमहले।
शपथ खा चुके हैं अंधियारे
हर लेने को स्वप्न सुनहले।
मन में ऐसी ज्योति जगा दे
हीरक सा दमके मन मेरा।।

-525/293, पुराना महानगर, लखनऊ-226006

जाने कब ढह जाये!

उमेश 'राही'

संसार को खंगाल कर देखा,
साहिल पर आकर देखा,
जिन्दगी लहरों की तरह,
आयी गयी, बार-बार देखा।
सांसे हैं घिरौदा, पानी है जिन्दगी,
जाने कब ढह जाए-
मयखाने में मदहोश होकर देखा,
गम में हंस कर देखा।।

-नवीं, मुम्बई

कालजयी काव्य

प्रसाद-जयंती पर

इतना न चमत्कृत हो

जयशंकर 'प्रसाद'

"इतना न चमत्कृत हो बाले!
अपने मन का उपकार करो;
मैं एक पकड़ हूँ जो कहती
ठहरो कुछ सोच-विचार करो।
अम्बर-चुम्बी हिम-शृंगों से
कलरव कोलाहल साथ लिये;
विद्युत की प्राणमयी धारा
बहती जिसमें उन्माद लिये।
मंगल कुंकुम की श्री जिसमें
निखरी हो ऊषा की लाली;
भोला सुहाग इठलाता हो
ऐसी हो जिसमें हरियाली।
हो नयनों का कल्याण बना
आनन्द सुमन-सा विकसा हो,
वासन्ती के वन-वैभव में
जिसका पंचम स्वर पिक-सा हो;
जो गूँज उठे फिर नस-नस में
मूर्च्छना समान मचलता-सा,
आँखों के साँचे में आकर
रमणीय रूप बन ढलता-सा;
नयनों की नीलम की घाटी
जिस रस घन से छा जाती हो,
वह कौंध कि जिससे अन्तर की
शीतलता ठण्डक पाती हो।
हिल्लोल भरा हो ऋतुपति का
गोधूली की-सी ममता हो,
जागरण प्रात-सा हँसता हो
जिसमें मध्याह्न निखरता हो।
हो चकित निकल आई सहसा
जो अपने प्राची के घर से,
उस नवल चन्द्रिका से बिछले
जो मानस की लहरों पर से।
फूलों की कोमल पंखड़ियाँ
बिखरें जिसके अभिनन्दन में,
मकरन्द मिलाती हों अपना
स्वागत के कुंकुम चन्दन में।
कोमल किसलय मर्मर रव से
जिसका जयघोष सुनाते हों;
जिसमें दुख-सुख मिलकर मन के
उत्सव आनन्द मनाते हों।
उज्ज्वल वरदान चेतना का
सौन्दर्य जिसे सब कहते हैं,
जिसमें अनन्त अभिलाषा के
सपने सब जगते रहते हैं।
मैं उसी चपल की धात्री हूँ
गौरव महिमा हूँ सिखलाती,
ठोकर जो लगने वाली है
उसको धीरे से समझाती।"

('कामायनी' के 'लज्जा' सर्ग से साभार-सम्पादित अंश)

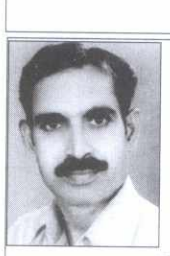

सन्देश

अखिलेश निगम 'अखिल'

आई.पी.एस.

आदमी को आदमी के काम आना चाहिए,
आपसी सौहार्द की गंगा बहाना चाहिए।
हर तरफ उसकी खुदाई का है जलवा देखिए,
गीत उसके ही हमें हर रोज़ गाना चाहिए।
फूल होंगे शूल होंगे ज़िन्दगी की बाग में,
प्यार, शुचि विश्वास का अद्भुत तराना चाहिए।
रोते-रोते यह, सफर हर्गिज नहीं कट पाएगा,
जब कभी मौका मिले, हँसना-हँसाना चाहिए।
हम जगत में आए हैं सबकी भलाई के लिए,
फर्ज हम सबको 'अखिल' अपना निभाना चाहिए।

-पुलिस अधीक्षक, उ.प्र.सर्तकता अधिष्ठान, विभूति खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ

स्वागत प्रिये वसंत!

गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

पतझड़ बीता आ गया, हँसता हुआ वसंत।
युवा हृदय गाने लगा, नवल गीत रसवंत।।
आनन्दित पूरी प्रकृति, उर में भरे उमंग।
करती हैं अठखेलियाँ, तितली भौंरे संग।।
सरसों पीले हाथ कर, पहुँच गयी ससुराल।
हँसी-ठिठोली कर रही, जौ, गेहूँ की बाल।।
स्वागत में मधुमास के, प्रकृति गा रही गान।
नई कोपलें आ गयी, लेकर मृदु मुस्कान।।
पंचम स्वर में गा रहा, प्रणयी कोकिल कंत।
नवकलिका ने हँसकर कहा, स्वागत प्रिये वसंत।।

-117, आदिल नगर विकास नगर, लखनऊ-22

दिल्ली-समाचार

६०वीं वैवाहिक वर्षगांठ सम्पन

आर्य लोक वार्ता की ऋत्विक सदस्या श्रीमती मिनी गुप्त एवं श्री डॉ.आर.एस. गुप्त की ६०वीं वैवाहिक वर्षगांठ तथा उनकी पौत्री आयु.तनवी के विवाहोत्तर समारोह का आयोजन दिनांक २३ दिसम्बर २०१८ को दिल्ली में सम्पन्न हुआ।

ज्ञातव्य है कि श्री पाल प्रवीण की बड़ी बहन श्रीमती मिनी स्वरूप एक विदुषी महिला, योग शिक्षिका व प्रतिदिन यज्ञ करने वाली महिला हैं। उनकी ६०वीं वैवाहिक वर्षगांठ पर देश-विदेश से बहुत से सम्बन्धी, मित्र हितैषी व उनके बच्चे अपने परिवार के साथ उक्त समारोह में सम्मिलित हुए। यज्ञ वेदी को विवाह मंडप की भांति सजाया गया था। भव्य हवन कुण्ड में सभी ने यज्ञ किया। देशबंधु विद्यालय के संस्कृत विभाग के आचार्य आशीष जी ने विशेष वैदिक मंत्रों से यज्ञ सम्पन्न कराया। शास्त्री जी ने मंत्रों का अर्थ हिन्दी व अंग्रेजी में समझाकर यज्ञ को रोचक बना दिया। श्रीमती मिनी व डॉ.गुप्ता के सुपुत्र श्री पीयूष गुप्ता (सी.ई.ओ.डेवेलपमेंट बैंक ऑफ सिंगापुर) एवं श्रीमती रुचिरा ने पूरी श्रद्धा व परिश्रम से इस भव्य आयोजन को यादगार बना दिया। उनकी सुपुत्री तनवी ने अपना जीवन साथी एक ऑस्ट्रेलियन श्री डेविड को चुना। आर्य लोक वार्ता परिवार की सभी को बधाई एवं शुभकामनाएं! *(पाल प्रवीण)*

राजस्थान-समाचार

आर्य नेता अर्जुनदेव चड्ढा का ने पूरे किए 75 वर्ष

कोटा, १४ जनवरी। आर्य समाज कोटा के पूर्व प्रधान एवं आर्य परिवार युवक युवती परिचय सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक तथा आर्य नेता अर्जुनदेव चड्ढा ने जीवन के ७५ वसंत पूर्ण होने के उपलक्ष्य में परिजनों व विभिन्न प्रदेशों से पधारे आर्य नेताओं और विद्वानों की उपस्थिति में आर्य समाज विज्ञान नगर में आयोजित दिव्य अमृत महोत्सव धूमधाम से आयोजित किया गया। इस अवसर पर आयुष्मान यज्ञ में उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं अन्तर्राष्ट्रीय वेद विद्वान् डॉ.विनय वेदालंकार के ब्रह्मत्व में तथा आचार्य शोभाराम आर्य एवं पंडित श्योराज वशिष्ठ के सान्निध्य में भारी संख्या में लोगों ने भाग लिया। इस दौरान लोगों ने अर्जुनदेव चड्ढा को साफा और माला पहनाकर अभिनन्दन किया। वहीं मोतियों की माला से स्वागत करने वालों का तांता लगा रहा। बड़ी संख्या में लोगों ने पहुंचकर बधाई दी तथा जो लोग नहीं पहुंच पाये उन्होंने भी पत्र प्रेषित कर बधाई संदेश भिजवाया।

आर्य समाज महावीर नगर का वार्षिकोत्सव

कोटा। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन हम सबके लिए प्रेरणादायक है और जीवन को मार्ग दिखलाने वाला है। उक्त विचार एलेन कोचिंग के निदेशक एवं कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गोविंद माहेश्वरी ने आर्य समाज महावीर नगर के तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव के समापन के अवसर पर व्यक्त किये। इस अवसर पर गुजरात गांधीधाम से पधारे वैदिक विद्वान आचार्य चंद्रेश जी, आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, वृद्धिचंद्र शास्त्री, शोभाराम आर्य ने भी संबोधित किया। आर्य समाज महावीर नगर द्वारा आर्य समाज के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए अर्जुनदेव चड्ढा, लालचंद आर्य, पी.सी.मित्तल, पी.डी.मेहरोत्रा, ऐलेन के निदेशक गोविंद माहेश्वरी का केसरिया दुपट्टा पहनाकर, शॉल ओढ़ाकर अभिनन्दन किया गया एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किये गये। कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज महावीर नगर के प्रधान आर.सी.आर्य ने किया तथा आभार राधा वल्लभ राठौर ने व्यक्त किया। शांतिपाठ के पश्चात ऋषिलंगर से कार्यक्रम का समापन हुआ। *(राधावल्लभ राठौर, मंत्री)*

हरियाणा-समाचार

महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर

महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर में यज्ञ भजन प्रवचन अभिनन्दन समारोह में श्री विजय आर्य पानीपत यज्ञ के ब्रह्मा रहे तथा श्रीमती मामकोर एवं महाशय रतिराम मुख्य यजमान रहे। जिला झज्जर की समस्त आर्य समाज के प्रधान श्री ऋषिपाल खेड़का गुज्जर कार्यक्रम के अध्यक्ष रहे। राजकीय स्नातकोत्तर कॉलेज के पूर्व प्राचार्य डॉ.एच.एस.यादव मुख्य वक्ता रहे। इस अवसर पर डॉ.यादव ने कहा कि यद्यपि प्रत्येक बल का अपना महत्व है फिर भी आत्मिक बल सबसे महान है। और यह बल निराकार ईश्वर की उपासना और उसकी आज्ञा का पालन करने से आता है। श्री ऋषिपाल आर्य ने बताया कि ईश्वर जीव प्रकृति तीनों अलग अलग अनादि पदार्थ हैं। आर्य समाज के प्रधान द्वारका प्रसाद, सूर्य प्रकाश, सत्यदेव, ऊधम सिंह, जयभगवान आर्य, चमन लाल यादव, भगवान सिंह, मास्टर पन सिंह तथा अध्यापिका सुमित्रा व कांता देवी ने मधुर भजन प्रस्तुत किये। वैदिक धर्म का संक्षिप्त परिचय कंठस्थ करने वाले मनस्वी, अनमोल, हर्षिता, जैसमिन, खुशी, दीप्ति आदि होनहार विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

बाराबंकी-समाचार

अमृत महोत्सव

लखनऊ के वरिष्ठ साहित्यकार श्री साधुशरण वर्मा 'सरन' के अस्सीवें जन्म दिवस को अमृत महोत्सव के रूप में लखनऊ के साहित्यकारों द्वारा मनाया गया। कार्यक्रम का आयोजन अवध भारती संस्थान हैदरगढ़, बाराबंकी द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि श्री महेशचन्द्र द्विवेदी पूर्व डी.जी.पी.उत्तर प्रदेश थे और विशिष्ट अतिथि डॉ.बसन्त कुमार तड़ियाल संयुक्त राज्य अमेरिका तथा श्री दीन मो.दीन मैनपुरी व सतीश आर्य गोण्डा सम्मानित अतिथि रहे। इस अवसर पर श्री 'सरन' की प्रथम अवधी कृति 'झुरि झुरि बहै पुरवैया' तथा उनके जीवन पर आधारित वृत्त चित्र का लोकार्पण भी हुआ। आयोजन में सत्तर विद्वानों व रचनाकारों की उपस्थिति दर्ज की गई।

हरदोई-समाचार

आर्य समाज सण्डीला

हरदोई जनपद की सर्वाधिक जागरूक एवं सक्रिय आर्य समाज-सण्डीला द्वारा मकर संक्रान्ति पर्व श्रद्धा और प्रेमपूर्वक मनाया गया। यज्ञ के उपरान्त खिचड़ी भोज हुआ; जिसमें आर्य समाज के सदस्यों के अलावा नगरवासियों ने भी भाग लिया और सामाजिक सौहार्द का परिचय दिया।

इस अवसर पर मकर संक्रान्ति पर्व के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया तथा दक्षिणायन और उत्तरायण के भावार्थ से जनता को परिचित कराया गया।

भावी कार्यक्रम

आर्य समाज सण्डीला जिला हरदोई के मार्गदर्शक एवं प्रवक्ता डॉ.सत्य प्रकाश जी की सूचना के अनुसार आगामी २७ फरवरी २०१६ को सीताष्टमी पर्व मनाया जायगा तथा एक मार्च को आर्य समाज के संस्थापक युग प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज का जन्म दिवस सोल्लास मनाये जाने का कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर बाहर से किसी विशिष्ट विद्वान् अतिथि वक्ता को आमंत्रित किये जाने की योजना बनाई जा रही है।

आर्य जनता से अनुरोध है कि अधिक से अधिक संख्या में आर्य समाज के कार्यक्रमों में भाग लेकर अपने जीवन को सफल बनायें। *(डॉ.सत्यप्रकाश)*

चीफ पोस्टमास्टर जनरल से नम्र निवेदन

हरदोई जनपद के सण्डीला नगर में 'आर्य लोक वार्ता' की लगभग 50 प्रतियाँ प्रतिमास आर.एम.एस.चारबाग लखनऊ के माध्यम से डाक द्वारा प्रेषित की जाती हैं। खेद है कि सण्डीला में एक भी प्रति का कभी वितरण नहीं होता।

जनता को मार्गदर्शन हेतु यह ज्ञान वर्द्धक पत्र बड़े परिश्रम से लोक कल्याणार्थ प्रकाशित किया जाता है। डाक विभाग के कर्मचारियों से पूछना चाहिए कि आखिरकार हमारी 50 प्रतियाँ प्रतिमास कहाँ जाती हैं?

आशा है, चीफ पोस्टमास्टर जनरल हमारे इस निवेदन पर अवश्य ध्यान देंगे। -प्रधान सम्पादक

लखनऊ-समाचार

सुन्दरम साहित्य रत्न सम्मान

अटल बिहारी वाजपेयी को समर्पित १७वें यू.पी.महोत्सव में 'सुन्दरम साहित्य रत्न' सम्मान का कार्यक्रम सुन्दरम साहित्यिक संस्था द्वारा आयोजित किया गया। जिसकी अध्यक्षता संस्था अध्यक्ष श्री नरेन्द्र भूषण ने की तथा मुख्य अतिथि सुल्तान शाकिर हाशिमी एवं विशिष्ट अतिथि अशोक कुमार पाण्डेय 'अशोक' जी थे। इस अवसर पर कुल दस वरिष्ठ कवियों- वी.सी.राय नया, रमाशंकर सिंह, कृष्णानन्द राय, राजाभैया गुप्ता, शिवनाथ सिंह, गौरीशंकर वैश्य विनम्र, मृगांक कुमार श्रीवास्तव, मंजुल मिश्रा, अलका त्रिपाठी, अनिल कुमार श्रीवास्तव का सारस्वत सम्मान किया गया। आयोजित कवि सम्मेलन में सम्मानित कवियों एवं मुख्य अतिथियों के अतिरिक्त रवीन्द्र नाथ तिवारी, विपिन मलिहाबादी, अशोक कुमार शुक्ल अनजान, हरि प्रकाश 'हरि' आदि सुकवियों ने सरस काव्यपाठ किया। कार्यक्रम का संचालन हरिमोहन वाजपेयी माधव ने किया।

मासिक काव्यगोष्ठी

प्रीतिकार साहित्य संस्था द्वारा संरक्षक अशोक कुमार श्रीवास्तव 'रंग' के आवास पर मासिक काव्य गोष्ठी आयोजित हुई जिसमें छन्दकार अशोक कुमार पाण्डेय अशोक अध्यक्ष, मुख्य अतिथि सम्पति कुमार मिश्र 'भ्रमर बैसवारी' तथा विशिष्ट अतिथि शिवनाथ सिंह रहे। वाणी वन्दना अशोक शुक्ल 'अनजान' ने प्रस्तुत की। तत्पश्चात् गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', अशोक श्रीवास्तव 'रंग', शिवराम तिवारी, अनूप कुमार ओम जी मिश्र 'वात्सल्य', राम नारायण तिवारी आदि ने सुमधुर काव्य पाठ किया। अतिथियों का स्वागत सम्मान किया गया। गोष्ठी का कुशल संचालन शिवराम तिवारी 'शिव' ने किया।

पेंशनधारक दिवस मनाया गया

ऑल इण्डिया ऑर्गेनाइजेशन आफ पेंशनर्स द्वारा चीफ पोस्ट मास्टर जनरल कार्यालय के मन्थन सभागार में 'केन्द्रीय सरकार पेंशन धारक दिवस' का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसके संरक्षक पूर्व चीफ पी.एम.जी. शारदा प्रसाद ओझा, अध्यक्ष बलवंत सिंह तथा महामंत्री वी.के.मिश्रा थे। कार्यक्रम में पेंशन धारकों को हो रही असुविधाओं पर विचार विमर्श हुआ। इस अवसर पर आर.एन.श्रीवास्तव, के.सी.मिश्रा, लक्ष्मण सिंह, वेद प्रकाश मिश्र विमल, राजकुमार पाल, अमर नाथ की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। *(गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र')*

शोक समाचार

साहित्यकार डॉ.विनोद चन्द्र पाण्डेय दिवंगत

०८.०२.२०१६। सेवानिवृत्त आई.ए.एस. एवं वरिष्ठ बाल साहित्यकार डॉ.विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' का लम्बी बीमारी के बाद निधन हो गया। ७८वर्ष की आयु में उन्होंने विवेकानन्द अस्पताल में अंतिम सांस ली। अलीगंज के सेक्टर-जे के निवासी डॉ.विनोद का जन्म १६ नवम्बर १६४० को अमेठी के पंडरी ग्राम में हुआ था। कविता के प्रति उनकी बचपन से ही रुचि थी। १२ वर्ष की आयु से ही उन्होंने काव्यरचना आरम्भ कर दी थी। वे उ.प्र.हिन्दी संस्थान में १६८२, १६६२ और १६६६ में निदेशक के पद पर रहे। उन्होंने अपने जीवन काल में ६ खण्ड काव्य, ४ महाकाव्य, १५ गीतिकाव्य और ५० बालकाव्य की रचना की जिनमें 'आजादी के गीत', 'गीत बाल कल्याण', 'चित्र कविता' तथा 'जय सुभाष' काफी लोकप्रिय काव्यसंग्रह हैं। माध्यमिक विद्यालयों में 'जय सुभाष' हिन्दी पाठ्यक्रम निर्धारित रहा। हिन्दी संस्थान की ओर से उन्हें 'सूर पुरस्कार' १६६६ में तथा 'बाल साहित्य भारती' सम्मान से विभूषित किया गया। 'आर्य लोक वार्ता' के गतांक में उनकी रचना 'कोटिशः नमन' प्रकाशित हुई थी। नहीं मालूम था कि वे इतनी जल्दी हमलोगों के बीच से चले जायेंगे। हार्दिक श्रद्धांजलि! *(गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र')*

नहीं रहीं श्रीमती राधा सिंह

१४, इन्द्रपुरी, जन कल्याण नलकूप समिमि हरीनगर नारायण नगर के वर्षों तक कोषाध्यक्ष रहने वाले श्री आर.के.सिंह की धर्मपत्नी श्रीमती राधा सिंह (८०) का निधन २८.०१.१६ को हो गया। दिनांक ३०.०१.१६ को उनके आवास पर वैदिक शांतियज्ञ का विधान डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर बड़ी संख्या में क्षेत्रीय नागरिक एवं पारिवारिक जन मौजूद थे, जिन्होंने यज्ञ में आहुति देकर दिवंगता के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रीमती राधा सिंह अपने पीछे पति श्री आर.के.सिंह के अलावा दो पुत्र जय सिंह, विजय सिंह तथा पुत्री उर्मिला सिंह को छोड़ गई हैं। दो मिनट मौन रहकर श्रीमती राधा सिंह की सद्गति एवं शान्ति की प्रार्थना की गई तथा उनके सद्गुणों पर प्रकाश डाला गया।

पुष्प लता श्रीवास्तव को श्रद्धांजलि

श्री एस.के.श्रीवास्तव की धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पलता श्रीवास्तव (८०) का आकस्मिक निधन दि. ३१.१२.१८ को हो गया। आपकी पुण्य स्मृति में दि. ०३.०१.१६ को वैदिक यज्ञ का आयोजन विकास खण्ड-२, मेयो हास्पिटल के पार्श्व में स्थित श्री शिशिर कुमार श्रीवास्तव के आवास पर डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। आर्य समाज की विचारधारा एवं वैदिक विचारों के अनुयायी इस परिवार में यज्ञ की सम्पूर्ण व्यवस्था परिवार की मुख्य सदस्या डॉ.(श्रीमती) रूपाली श्रीवास्तव ने की। इस अवसर पर बड़ी संख्या में पुष्पलता जी के पारिवारिक जन मौजूद थे। डॉ.संजय कुमार श्रीवास्तव (आर्थोपैडिक सर्जन), संचालक रेडियंस हास्पिटल, श्री कृष्णस्वरूप चौधरी, श्रीमती सुधा चौधरी, श्रीमती ज्योति श्रीवास्तव (नोएडा), अशोक कुमार अस्थाना (आजमगढ़), सौरभ चन्द्र एडवोकेट इत्यादि ने यज्ञ में आहुतियाँ देकर दिवंगता के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। आपके पुत्र श्री शिशिर कुमार श्रीवास्तव सम्प्रति पुणे में स्थायी रूप से रहते हैं। इस अवसर पर स्व.पुष्पलता जी के सद्गुणों पर प्रकाश डाला गया। दो मिनट मौन रहकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

लखनऊ-समाचार

आर्य समाज आदर्श नगर, आलमबाग

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज आदर्श नगर, आलमबाग, लखनऊ का वार्षिक उत्सव समारोह दिनांक ७ से १० फरवरी २०१६ तक आर्य समाज मंदिर में सम्पन्न हुआ। प्रातः कालीन वैदिक यज्ञ प्रतिदिन आचार्य सन्तोष कुमार वेदालंकार के आचार्यत्व में होता रहा। प्रातःकालीन एवं सायंकालीन उभय सत्रों में वेदोपदेश, भजन, प्रवचन के कार्यक्रम चलते रहे। जाने माने विद्वान् आचार्य पुनीत शास्त्री (मेरठ) के प्रवचनों तथा पं.मोहित आर्य (बिजनौर) आर्य भजनोपदेशक के भजनों को रुचिपूर्वक सुना गया तथा सराहा गया। अंतिम दिन १० फरवरी को मध्याह्न में ऋषिलंगर की व्यवस्था की गई तथा इससे पहले विद्वानों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रमों का सुंदर संचालन श्री सतीश निझावन (पूर्व मंत्री), हरीश निझावन एवं श्री रुद्रस्वरूप मंत्री आर्य समाज ने किया। प्रधान श्री सतीश बिसारिया जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मोत्सव

आर्य समाज आदर्श नगर द्वारा आर्य समाज के संस्थापक युग-प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के जन्म दिवस के अवसर पर भंडारे (ऋषिलंगर) का आयोजन किया गया। प्रधान श्री सतीश चन्द्र बिसारिया के आवास के सन्निकट दिनभर पूड़ी सब्जी इत्यादि का वितरण होता रहा। आर्य समाज के मंत्री श्री रुद्र स्वरूप तथा अन्य पदाधिकारियों के सहयोग से तथा श्री सतीश निझावन के विशेष योगदान ने वितरण-व्यवस्था में विशेष योगदान दिया। *(सतीश निझावन)*

सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट

देवयज्ञ, सत्संग एवं वेदकथा

दिनांक १८ से २० जनवरी २०१६ को तीन दिनों तक अविरल प्रवाहित वैदिक ज्ञान-भक्ति-कर्म की त्रिवेणी में स्नान करके शत-सहस्र नर-नारियों ने अवगाहन करके अपने को पवित्र किया। अवसर था- सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट एवं जिला वेद प्रचार संगठन लखनऊ द्वारा आयोजित देवयज्ञ, सत्संग समन्वित वेदकथा का। शुक्ला चौराहा जानकीपुरम् स्थित आर्ष गुरुकुलम् विद्या मंदिर में आयोजित इस धार्मिक समारोह में आध्यात्मिक अनुष्ठान, वैदिक उपासना का वैश्विक महत्व, यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म, आदर्श गृहस्थ आश्रम, यज्ञो भुवनस्य नाभिः एवं वैदिक कवि सम्मेलन- छः सत्रों में- प्रतिदिन की अध्यक्षता आचार्य विश्वव्रत शास्त्री, डॉ.भानु प्रकाश, विश्वमित्र शास्त्री एवं ख्यातिलब्ध कवि श्री सारस्वत मोहन मनीषी ने की तथा संचालन श्री नवीन कुमार सहगल, श्रीमती रश्मि गुप्त, श्री सर्वमित्र शास्त्री ने किया एवं स्वागताध्यक्ष की भूमिका राजेश्वर प्रसाद मिश्र, श्रीमती राजकुमारी मिश्र, श्री अरविन्द गुप्त एवं श्रीमती मधूलिका गुप्त, श्री सन्तोष कुमार त्रिपाठी एवं श्रीमती हीरामणि त्रिपाठी ने निभाई। श्री नरेन्द्र आर्य, संजीव कुमार मिश्र, श्रीमती यशोदा शर्मा, श्री देवेन्द्र स्वरूप गुप्त ने शान्तिपाठ किया।

आचार्य विश्वव्रत के संरक्षण में १०८ कुण्डीय यज्ञ प्रतिदिन प्रातःकाल होता रहा जिसने समारोह को व्यापक परिवेश प्रदान किया। आमंत्रित विशिष्ट विद्वानों में श्रीमती धर्मरक्षिता भजनोपदेशिका (बिहार), पं.दिनेश आर्य 'पथिक' (अमृतसर) स्वामी श्रद्धानन्द (बदायूँ), स्वामी योगानन्द (पंजाब), आचार्या डॉ.निष्ठा विद्यालंकार के नाम उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त स्वामी वीरेन्द्र सरस्वती, आचार्य सन्तोष वेदालंकार, श्रीमती कविता सहगल, श्रीमती प्रियंका शास्त्री, श्रीमती यशोदा शर्मा, महात्मा प्रेममुनि एवं पाल प्रवीण प्रभृति ने अपने उपदेश एवं गायन से श्रोताओं को आह्लादित किया। समारोह को आचार्य विश्वव्रत के निर्देशन में डॉ.सत्यकाम आर्य, नवीन कुमार सहगल, सर्वमित्र शास्त्री, चन्द्रभान सिंह, आर.के.शर्मा के अथक परिश्रम ने सफलता प्रदान की। कार्यक्रम की विशिष्ट उपलब्धि के रूप में 'वेद प्रचार वाहन' एवं वैदिक पुस्तकालय के लोकार्पण ने कार्यकर्ताओं में नवीन उत्सह का संचार किया। श्री अखिलेश मिश्र की प्रेरणा की सर्वत्र सराहना की जाती रही। *(डा.सत्यकाम आर्य)*

आर्य समाज शृंगार नगर, आलमबाग

स्थापना दिवस एवं वार्षिकोत्सव

०३.०२.२०१६। आर्य समाज शृंगार नगर, आलमबाग, लखनऊ का स्थापना दिवस एवं वार्षिक उत्सव आचार्य डॉ.रूपचन्द्र दीपक की अध्यक्षता में उल्लास पूर्वक मनाया गया। लखनऊ की प्रायः समस्त आर्य समाजों के प्रतिनिधियों एवं आलमबाग परिक्षेत्र के प्रबुद्ध जनों से भरे हुए सभागार में उत्सव के मुख्य वक्ता ख्यातिलब्ध वैदिक विद्वान् आचार्य डॉ.वागीश शर्मा ने 'ईश्वरीय आनन्द की प्राप्ति कैसे करें' विषय पर सारगर्भित और बोधगम्य व्याख्यान से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। आचार्य प्रवर ने श्रोता समूह की जिज्ञासाओं को भी सही और उचित समाधान देकर संतुष्ट किया।

प्रारंभ में आचार्य दीपक के संरक्षण में वैदिक यज्ञ सम्पन्न हुआ तथा प्रसिद्ध गायक श्री राधेश्याम शर्मा जी की भजन मण्डली का गायन हुआ। अध्यक्ष के धन्यवाद ज्ञापन एवं सहभोज के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। *(प्रत्यूषरत्न पाण्डेय)*

महिला शक्ति मण्डल ने मनाया वसंतोत्सव

१५.०२.१६। प्रख्यात वेद विदुषी (स्व.) डॉ.शान्तिदेव बाला द्वारा संस्थापित महिला शक्ति मण्डल ने गतवर्षों की परम्परा में वसंत पंचमी के उपलक्ष्य में वैदिक यज्ञ, वसंतोत्सव एवं सरस्वती पूजन का कार्यक्रम सी-३५०, महानगर, लखनऊ में श्रीमती नीरू सक्सेना के आवास पर मनाया। वैदिक यज्ञ डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक 'आर्य लोक वार्ता' ने वसंत पंचमी पर्व की आहुतियों के साथ सम्पन्न कराया। पर्व की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए आचार्य ने बताया कि वसंत पंचमी पर्व भारतीय संस्कृति की ज्ञानगरिमा और महिमा का परिचायक है। सुरुचि पूर्ण प्रसाद वितरण, महिला संगीत, शारदा पूजन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम श्रीमती गीता गुप्ता की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। श्रीमती नीरू सक्सेना संयोजिका ने आभार प्रदर्शन किया तथा हेमलता जी, हेमा तिवारी, विजयलक्ष्मी, राजकुमारी सक्सेना तथा रंजना दीवान सहित बड़ी संख्या में महिलाओं ने अपनी उपस्थिति से महिलाओं के सशक्तीकृत रूप का परिचय दिया।

टाण्डा-समाचार

मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज टाण्डा का 75वाँ स्थापना दिवस समारोह

दिनांक १० फरवरी २०१६ रविवार को बसंत पंचमी के दिन मिश्रीलाल आर्य

कन्या इण्टर कालेज, टाण्डा, जिला अम्बेडकरनगर का ७५वाँ स्थापना दिवस बृहद् एवं भव्य रूप से उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस विद्यालय को स्वतंत्रता संग्राम सेनानी बाबू मिश्रीलाल आर्य ने बसंत पंचमी १९४४ को आर्य कन्या पाठशाला के रूप में संस्थापित किया था। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ द्वारा लखनऊ से आये प्रसिद्ध आर्य विद्वान् पं.दीनानाथ शास्त्री एवं गुरुकुल अयोध्या के कुलपति आचार्य नागेन्द्र शास्त्री तथा उनके वेदपाठी शिष्यों द्वारा सम्पन्न कराया गया। यज्ञ में विद्यालय की अध्यक्षा सुश्री कु.वीना वर्मा, विद्यालय के प्रबंधक श्री आनन्द कुमार आर्य तथा विद्यालय की प्रधानाचार्या डॉ.(श्रीमती) प्रशिषा श्रीवास्तव, डी.ए.वी. एकेडमी की प्रधानाचार्या श्रीमती अनीता सिंह, विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्य श्री भूपेन्द्र मेहरोत्रा सपत्नीक श्री मनीष कुमार आर्य, सुश्री श्वेता गुप्ता, श्रीमती ममता जायसवाल एवं डॉ.हनुमन्त लाल ने यजमान का पद ग्रहण कर यज्ञ को विस्तृत स्वरूप प्रदान किया। यज्ञोपरान्त अध्यक्षा कु.वीना वर्मा एवं प्रबंधक श्री आनन्द कुमार आर्य ने ध्वजारोहण किया साथ में मुख्य अतिथि के रूप में पं.दीना नाथ शास्त्री एवं विद्यालय के पदाधिकारी तथा सदस्यगण मौजूद थे।

मंचीय कार्यक्रम का आरम्भ ध्वजगीत एवं ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना मंत्रों के पाठ के साथ आर्य कन्या की छात्राओं द्वारा वाद्ययंत्रों के साथ हुआ। कार्यक्रम के संचालक श्री दिवाकर मौर्य ने सभी अतिथियों का विद्यालय परिवार की ओर से यथोचित हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन किया और विद्यालय के गौरवमयी ऐतिहासिक अतीत का वर्णन बड़े ही भावपूर्ण एवं ओजस्वी शब्दों में प्रस्तुत किया। मुख्य वक्ता के रूप में पूर्व प्रधानाचार्य (रामदेव जनता इण्टर कालेज कटेहरी) श्री निरंजन प्रसाद शर्मा ने विद्यालय के शैक्षिक उन्नयन की विशेषताओं को वर्णित करते हुए सभी को भावविभोर कर दिया। इसी कड़ी में श्री नौशाद अली सिद्दीकी (मण्डलीय स्काउट-गाइड कमिश्नर अलीगढ़) ने भी अपने व्याख्यान में विद्यालय की गतिविधियों एवं विद्यालय के उत्तरोत्तर विकास की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए अपने अनुभवों को अभिभावकों से साझा किया।

तत्पश्चात् जिला विद्यालय निरीक्षक अम्बेडकरनगर श्री विनोद कुमार सिंह ने छात्रों एवं अभिभावकों को सम्बोधित करते हुए विद्यालय को जनपद का सर्वश्रेष्ठ विद्यालय बताया तथा इसी क्रम में उन्होंने विद्यालय को एन.एस.एस. की मान्यता प्रदान करते हुए शिलापट अनावरण किया एवं एन.सी.सी. की मान्यता प्रदान करने की घोषणा की जिसका सभी ने करतल ध्वनि से स्वागत किया।

ज्ञातव्य है कि बसंत पंचमी सन् १९४४ के शुभ अवसर पर विद्यालय की स्थापना हुई थी अतः सभी लोगों ने ७५वर्ष पूर्ण होने पर बसंत पंचमी के ही दिन विद्यालय का स्थापना दिवस मनाया। आपको यह बताते चलें कि यह तो कार्यक्रम मात्र आगाज था, माह नवम्बर २०१६ दिनांक १५ से १७ को विद्यालय की कौस्तुभ जयन्ती बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनायी जायगी जिसमें आपकी गरिमामयी उपस्थिति हमारे लिए अत्यंत ही हर्ष का विषय होगी। कार्यक्रम का समापन अध्यक्ष एवं अध्यक्षा के अध्यक्षीय भाषण द्वारा सभी को आभार ज्ञापित करते हुए बच्चों को शुभाशीष के साथ हुआ।

लखनऊ-समाचार

आर्य समाज इन्दिरा नगर का वार्षिक निर्वाचन

दिनांक २०.०१.१६ को प्रधाना इं. श्रीमती कान्ति कुमार की अध्यक्षता में सम्पन्न कार्यकारिणी की बैठक में वर्ष २०१६ हेतु चयनित आर्यसमाज इन्दिरा नगर की कार्यकारिणी निम्न प्रकार है-

श्री रामेन्द्रदेव वर्मा	प्रधान
श्रीमती कुसुम सिंह	उपप्रधान
श्री मुकेश चन्द्र मित्तल	उपप्रधान
श्री डोरी लाल आर्य	मंत्री
श्रीमती सरिला श्रीवास्तव	उपमंत्री
श्री रमेश चन्द्र	उपमंत्री
श्री अभय मुनि	कोषाध्यक्ष
श्री सुरेन्द्र कुमार निगम	पुस्तकालयाध्यक्ष
डॉ.वेद प्रकाश (इं.)	अधिष्ठाता आ.वी.दल
श्रीमती शैलजा भटनागर	आय-व्यय निरीक्षक
श्री नवनीत निगम –	जिला आर्य प्रतिनिधि सभा
श्रीमती कान्ति कुमार–	जिला आर्य प्रतिनिधि सभा
डॉ.इन्द्रदेव गुप्ता –	आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.
श्री जे.पी.आर्य–	आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.

अन्तरंग सदस्य–श्री नवनीत निगम, श्रीमती कान्ति कुमार, डॉ.इन्द्रदेव गुप्त, श्री जे.पी.आर्य, श्री ओम कुमार सक्सेना, श्रीमती सुशीला वार्ष्णेय, श्री सदानन्द राय, श्री आर.जी.शर्मा, श्री रामगोविन्द ठाकुर, श्री संसार नाथ शर्मा, श्री गंगाराम आर्य, श्री अक्षय भाई, श्रीमती रागिनी सक्सेना, श्रीमती कुसुम वर्मा, श्रीमती सरोजनी आर्य, डा.नरेन्द्र कुमार, श्रीमती आनन्द कुमारी, श्रीमती शैल कुमारी, श्रीमती मनवासा राम।

(मंत्री, आर्यसमाज, इन्दिरानगर)

मांगलिक समाचार

बसंत पंचमी के शुभ लग्न में श्रीधरत्न

पाण्डेय-अर्चना पाण्डेय की सुपुत्री अरुणिमा का पाणिग्रहण संस्कार श्रीमती रीना एवं अशोक तिवारी के सुपुत्र श्री सिद्धार्थ के साथ सम्पन्न हुआ। बी.आर.पैलेस, आई.आई.एम. रोड, लखनऊ में आयोजित यह विवाह संस्कार प्रख्यात आर्य पुरोहित श्री रवीन्द्र शास्त्री एवं रणवीर शास्त्री (औरैया) ने सम्पन्न कराया। सम्पूर्ण समारोह की सुव्यवस्था एवं भव्यता दर्शनीय थी। शतशः शुभकामनाएँ-

नक्तं दिव मधुमय हो तुमको,
धरती का कण-कण मधुमय हो।
सिद्धअर्थ - अरुणिमा तुम्हारे,
जीवन का क्षण क्षण मधुमय हो।।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

संरक्षक एवं निर्देशक
कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-638/181डी,
शिवविहार कालोनी, पो.-सीमैप,
पिकनिक स्पाट रोड, लखनऊ-226015
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9651333679

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
: 9450500138

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा वाजपेयी
: 7310119999

नवोन्मेष
कृष्णा जी, प्रिंटेक

ई-मेल
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	1,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	15,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है–

बैंक–बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 46900 1000 00651

प्रतिष्ठापक
श्री अरविन्द कुमार आर्किटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
श्री सर्वमित्र शास्त्री, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-2, हिमांशु सदन, 5-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क / 234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।